मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

01 फरवरी, 2021

मुक्त विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 1-2- 2021 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय सरस्वती परिसर परिसर में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा किया गया । क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने बताया की योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न अध्ययन केंद्रों के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया तथा विश्वविद्यालय मानविकी विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने योग से बौद्धिक विकास एवं मानव निर्माण पर अपना व्याख्यान दिया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर जी शुक्ला ने अतिथि का स्वागत अंगवस्त्रम के द्वारा किया इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉक्टर संजय सिंह डॉ आनंद आनंद त्रिपाठी शिवेंद्र प्रताप सिंह एवं योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह मौजूद रहे ।

योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित छात्र एवं अतिथिगण।

R.N.I. UPHIN/2012/52437
संस्करण : प्रयागराज
वर्ष : 07
अंक : 113
पृष्ठ : 8
मूल्य : 1.00
मंगलवार, 2 फरवरी, 2021
जुनून है सच लिखने का
डाक पंजीयन संख्या :-
मंत्र भारत
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज, लखनऊ एवं मुम्बई से एक साथ प्रकाशित एवं प्रतापगढ़, कौशाम्बी, भदोही, मिर्जापुर व वाराणसी से प्रसारित

मुक्त विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ

संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में सोमवार को सरस्वती परिसर में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा किया गया। जिसमें विभिन्न अध्ययन केंद्रों के एम. ए .योग, पीजीडीवाईओ, योग में डिप्लोमा तथा सी सी वाई के छात्र

छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मानविकी विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने योग से बौद्धिक विकास एवं मानव निर्माण पर अपना व्याख्यान दिया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर जी एस शुक्ल ने अतिथि का स्वागत अंगवस्त्रम के द्वारा किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा क्षेत्रीय केंद्र के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने प्रस्तुत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ संजय सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, शिवेंद्र प्रताप सिंह एवं योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह मौजूद रहे।

आनंदी मेल
हिन्दी दैनिक) लखनऊ, मंगलवार, 2 फरवरी 2021 R.N.I No.UPHIN/2009/29300 पृष्ठ: 8

मुक्त विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ

आनंदी मेल संवाददाता, प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में सोमवार को सरस्वती परिसर में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा किया गया। जिसमें विभिन्न अध्ययन केंद्रों के एम. ए .योग, पीजीडीवाईओ, योग में डिप्लोमा तथा सी सी वाई के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मानविकी विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने योग से बौद्धिक विकास एवं मानव निर्माण पर अपना व्याख्यान दिया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर जी एस शुक्ल ने अतिथि का स्वागत अंगवस्त्रम के द्वारा किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा क्षेत्रीय केंद्र के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने प्रस्तुत की।

दैनिक कर्मठ
राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित
प्रयागराज, मंगलवार, 02 फरवरी 2021 विक्रम संवत 2076 प्रातः संस्करण ईमेल -dainikkarmath@gmail.com पृष्ठ : 08
प्रयागराज ,मंगलवार 02 फरवरी 2021 3

मुक्त विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में सोमवार को सरस्वती परिसर में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा किया गया। जिसमें विभिन्न अध्ययन केंद्रों के एम. ए .योग, पीजीडीवाईओ, योग में डिप्लोमा तथा सी सी वाई के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मानविकी विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने योग से बौद्धिक विकास एवं मानव निर्माण पर अपना व्याख्यान दिया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर जी एस शुक्ल ने अतिथि का स्वागत अंगवस्त्रम के द्वारा किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा क्षेत्रीय केंद्र के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने प्रस्तुत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ संजय सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, शिवेंद्र प्रताप सिंह एवं योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान
प्रयागराज • रविवार • 31 जनवरी 2021

प्रोफेसर, इंस्पेक्टर समेत 22 संक्रमित

प्रयागराज। कोरोना संक्रमण का असर धीरे-धीरे कम हो रहा है। शनिवार को जिले में 22 और संक्रमित मिले। इनमें राजर्षि टंडन विवि के प्रोफेसर, गन्ना संस्थान के इंस्पेक्टर शमिल हैं। नोडल अधिकारी डॉ. ऋषि सहाय के अनुसार 16 लोगों ने कोरोना को मात दी। इनमें से पांच को अलग-अलग अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया। 11 लोगों का होम आइसोलेशन पूरा हुआ। 7310 लोगों का सैंपल विभाग की ओर से लिया गया।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज में प्रोफ़ेसर साहब के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने पर गंगा परिसर और सरस्वती परिसर में संपत्ति अधिकारी द्वारा सैनिटाइजेशन का कार्य कराया गया।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

02 फरवरी, 2021

मुविवि में योग प्रशिक्षण बौद्धिक सत्र का आयोजन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र के तत्वावधान में मंगलवार 02 फरवरी 2021 को योग प्रशिक्षण प्रयोगात्मक परीक्षा के बौद्धिक सत्र को संबोधित करते विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो० कामेश्वर नाथ सिंह तथा उपस्थित छात्र छात्रायें ।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के सरस्वती परिसर में मंगलवार को योग प्रशिक्षण प्रयोगात्मक परीक्षा के दौरान बौद्धिक सत्र का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर सिंह का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरजा शंकर शुक्ल ने किया। बौद्धिक कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह, डॉ० अभिषेक सिंह, डॉ० आनन्दा नन्द त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए निदेशक स्वास्थ्य विज्ञान, प्रो० जी०एस० शुक्ल एवं उपस्थित छात्र–छात्रायें।

मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है : प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

बौद्धिक सत्र में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफल होना एक अलग बात है और जीवन में सफल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे। उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ.साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है । जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए । हम पारिवारिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफल हों, जीवन के लिए यह भी आवश्यक है। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हूं तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें। प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनंदिन जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। उन्होंने कहा कि योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है वही मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है।

विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को अंगवस्त्र भेंट कर उनका सम्मान करते हुए निदेशक स्वास्थ्य विज्ञान, प्रो0 जी0एस0 शुक्ल एवं उपस्थित छात्र–छात्राओं को योग प्रशिक्षण देत हुए विश्वविद्यालय के योग शिक्षक श्री अमित कुमार सिंह ।

JEEVAN EXPRESS
TUESDAY, 2 FEBRUARY 2021

Yoga training program started in UPRTOU

STAFF REPORTER

PRAYAGRAJ: Yoga training program started at Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University on Monday. Students of MA Yoga, PGDYO, Diploma in Yoga and CCY of various study centers participated in the training conducted by Regional Center Prayagraj. On this occasion, Director of Humanities Education Branch Professor Satyapal Tiwari gave his lecture on intellectual development and human creation from Yoga. Director of the Health Sciences Education Branch Professor GS Shukla welcomed the guest by giving him shawl. Dr. Sanjay Singh, Dr. Anandanand Tripathi, Shivendra Pratap Singh and Yoga instructor Amit Kumar Singh were present in the training program.

हिन्दी दैनिक
इलाहाबाद एक्सप्रेस
सच का आधार ...
वर्ष : 11 अंक : 303, प्रयागराज, गुरुवार 04 फरवरी 2021, पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योग : प्रोफेसर सिंह

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज। योग क्रिया द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है, वहीं यह मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है।

उक्त विचार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्वविद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किया। उन्होंने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफल होना अलग बात है और जीवन में सफल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है, उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे। उन्होंने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है, लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है। जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें।

कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह, योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया।

मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज, कौशांबी, प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एम.ए योग, योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

आनंदी मेल
दी दैनिक) लखनऊ, गुरुवार, 4 फरवरी 2021 R.N.I No.UPHIN/2009/29300 पृष्ठ: 8

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योग : प्रोफेसर सिंह

आनंदी मेल संवाददाता

प्रयागराज। योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है वहीं मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है। उक्त उद्गार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्व विद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए। प्रोफेसर सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफ ल होना अलग बात है और जीवन में सफ ल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है। जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए । हम पारिवारिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफल हों जीवन के लिए यह भी आवश्यक है। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें। प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनंदिन जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह, योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया। मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज, कौशांबी, प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एम. ए. योग, योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

दैनिक कर्मठ
राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित
प्रयागराज, गुरुवार, 04 फरवरी 2021 विक्रम संवत 2076 ज्ञात संस्करण ईमेल -dainikkarmath@gmail.com पृष्ठ : 08

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योग : प्रोफेसर सिंह

प्रयागराज।योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है वहीं मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है।

उक्त उद्गार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्व विद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए।

प्रोफेसर सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफल होना अलग बात है और जीवन में सफल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे।

प्रोफेसर सिंह ने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है । जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए । हम पारिवारिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफल हों जीवन के लिए यह भी आवश्यक है।

कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें। प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनंदिन जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह, योग प्रशिक्षक श्री अमित कुमार सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया।

मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज, कौशांबी, प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एम. ए. योग, योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

समय से पहले 'समय' पर नजर
न्यायाधीश
प्रयागराज,गुरूवार,04 फरवरी, 2021

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योगः प्रोफेसर सिंह

प्रयागराज।योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है वहीं मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है। उक्त उद्गार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्व विद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए।

प्रोफेसर सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफल होना अलग बात है और जीवन में सफल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे।

प्रोफेसर सिंह ने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है । जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए । हम पारिवारिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफल हों जीवन के लिए यह भी आवश्यक है।

कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें।प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनंदिन जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह, योग प्रशिक्षक श्री अमित कुमार सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया।

मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज, कौशांबी, प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एम. ए. योग, योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

दैनिक सच्चाई की जंग

लोकमित्र

वर्ष : 27 | अंक : 94
प्रतापगढ़ |गुरुवार ,4 फरवरी-2021
पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रुपये

प्रतापगढ़, कौशाम्बी, अमेठी एवं लखनऊ से एक साथ प्रकाशित

संस्थापक : श्रद्धेय स्व. रामनिरंजन भगवन | प्रतिदिन की खबरों के लिए देखें www.dailylokmitra.com | R.N.I. No.: 71870/94

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योग- प्रोफेसर सिंह

प्रयागराज। योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है वहीं मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है।उक्त उद्गार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्व विद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए।प्रोफेसर सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैरियर में सफल होना अलग बात है और जीवन में सफल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है उसमें वह सफल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे।प्रोफेसर सिंह ने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफल होना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर का सफल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना जरूरी है । जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफल होना चाहिए। हम पारिवारिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफल हों जीवन के लिए यह भी आवश्यक है। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त, विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें। प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनंदिन जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह, योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया। मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज, कौशांबी, प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एम. ए. योग, योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

3 राजधानी बाइक की मांग पूरी नहीं हुई तो बहू को जिंदा जला दिया | 6 अभिमत कृषि क्षेत्र पर बजट प्रस्ताव | 10 स्पोर्ट्स मेरा काम पीछे से विराट की मदद करना: रहाणे | 11 विदेश चीन की आक्रामक कार्रवाई का विरोध करेंगे: अमेरिका

RNI NO. UPHIN/2010/36547
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 4 फरवरी, 2021

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

सोनाली की सलाह पर ही अभिनय क्षेत्र में आई
विविध-12

www.dailypioneer.com

मानसिक शांति का महत्वपूर्ण साधन है योग: प्रो. सिंह

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज

योग क्रिया के द्वारा जहां शरीर को कई व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है। वहीं मानसिक शांति का यह एक महत्वपूर्ण साधन है। यह बातें उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्वविद्यालय में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में कहीं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कैरियर में सफ्ल होना अलग बात है और जीवन में सफ्ल होना अलग बात है। व्यक्ति अपना जो भी कार्य क्षेत्र अपनाता है। उसमें वह सफ्ल तभी होता है जब वह दक्षता पूर्ण एवं कुशलता पूर्ण कार्य करे।

प्रोफेसर सिंह ने कहा कि उसमें कुछ हुनर हो तो वह अपने कैरियर में सफ्ल होता है लेकिन केवल कैरियर में सफ्ल होना महत्वपूर्ण नहीं है। कैरियर का सफ्ल होना महत्त्व तो रखता है लेकिन कैरियर के साथ साथ जीवन में भी सफ्ल होना जरूरी है। जिस दृष्टि को लेकर हम जी रहे हैं उसमें भी हमें सफ्ल होना चाहिए। हम पारिवारिक दृष्टिकोण से सामाजिक दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी सफ्ल हों जीवन के लिए यह भी आवश्यक है। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज हमें पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के प्रति सतर्क एवं सचेत होने की आवश्यकता है। हमें ऐसे आदर्श व्यक्ति का चुनाव करना है जो सामाजिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में विश्वास रखता हो तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति भी अत्यंत सचेत हो। जिसको स्थान और समय का बोध हो तथा समतायुक्त विषमता मुक्त तथा समरसता पूर्ण समाज की रचना में अपना अभीष्ट योगदान दे सकें। प्रोफेसर सिंह ने योग को दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण मंत्र बताया। कुलपति का स्वागत स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र के समन्वयक डा अभिषेक सिंह योग प्रशिक्षक अमित कुमार सिंह डा आनंदानंद त्रिपाठी डा शिवेंद्र प्रताप सिंह आदि ने छात्रों को योग की महत्ता के बारे में बताया। मीडिया प्रभारी डा प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज कौशांबी प्रतापगढ़ तथा चित्रकूट स्थित अध्ययन केंद्रों के एमए योग योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा योग में डिप्लोमा तथा योग में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के सैकड़ों छात्र छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं।

JEEVAN EXPRESS

THURSDAY, 4 FEBRUARY 2021

'Yoga is an important means of mental peace'

STAFF REPORTER

PRAYAGRAJ: While the body can get rid of many diseases through yoga, it is an important means of mental peace. The above quotes were expressed by the Vice Chancellor of Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prof. Kameshwar Nath Singh at a yoga training program organized at the University campus on Wednesday. While expressing his views Prof. Singh described yoga as an important mantra of daily life. The Vice Chancellor was welcomed by Professor Girija Shankar Shukla, Director of Science Sciences Branch. On this occasion, Allahabad Regional Center Coordinator Dr. Abhishek Singh, Yoga instructor Amit Kumar Singh, Dr. Anandanand Tripathi, Dr. Shivendra Pratap Singh, etc., told the students about the importance of yoga. Media in-charge Dr. Prabhat Chandra Mishra told that hundreds of students are participating in Yoga PG Diploma in Yoga, Diploma in Yoga and certificate program in Yoga of MA of study centers located in Prayagraj, Kaushambi, Pratapgarh and Chitrakoot.

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

04 फरवरी, 2021

मुविवि में योग प्रशिक्षण बौद्धिक सत्र का आयोजन

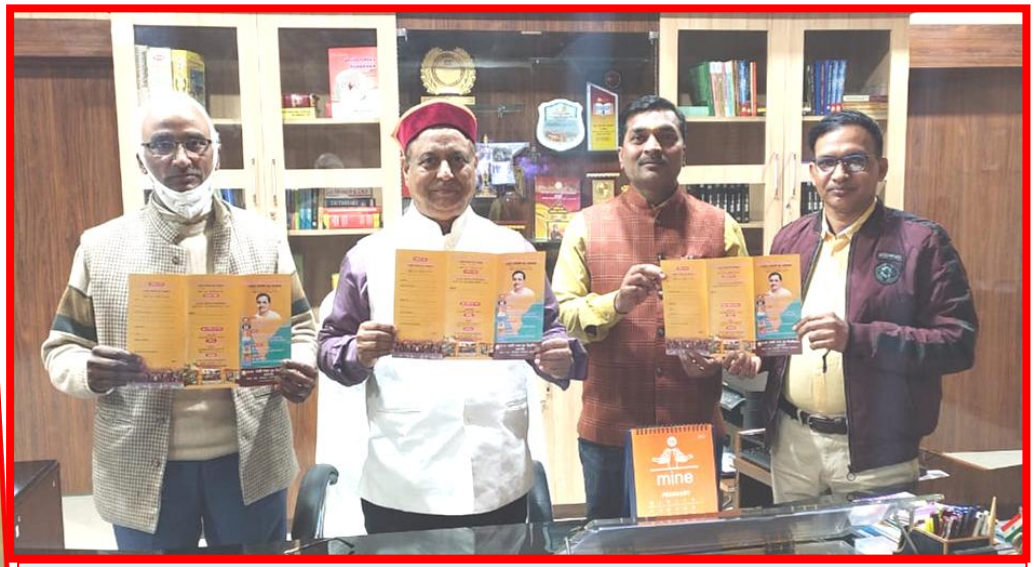

*राष्ट्रीय सह. व्याख्यान के **कार्यक्रम विवरणका** का विमोचन करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह जी तथा साथ में राष्ट्रीय संगोष्ठी सह.–व्याख्यान के संयोजक एवं स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रोफेसर जी.एस. शुक्ल, आयोजन सचिव डॉ संजय कमार सिंह एवं आयोजन सह.सचिव डॉ सुरेंद्र कमार*

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्यतिथि दिनांक 11 फरवरी 2021 के पूर्व संध्या पर दिनांक 10 फरवरी 2021 को राष्ट्रीय संगोष्ठी सह.व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है इस राष्ट्रीय सह . व्याख्यान के **कार्यक्रम विवरणका** का विमोचन दिनांक 4 फरवरी 2021 को विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह.–व्याख्यान के संयोजक एवं स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रोफेसर जी.एस. शुक्ल, आयोजन सचिव डॉ संजय कुमार सिंह एवं आयोजन सह. सचिव डॉ सुरेंद्र कुमार उपस्थित रहे

पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रद्धा सुमन दिवस

राष्ट्रीय संगोष्ठी सह–व्याख्यान

दिनांक : 10 फरवरी, 2021

दोपहर 12:00 - अपराह्न 02:00 तक

संरक्षक

प्रोफेसर के0एन0 सिंह

माननीय कुलपति

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संयोजक

प्रो0 (डॉ0) जी0 एस0 शुक्ल

निदेशक, पं0 दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

आयोजन सचिव

डॉ. संजय कुमार सिंह

सह-आचार्य (भूगोल) - समाज विज्ञान विद्याशाखा

आयोजन सह-सचिव

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य (शिक्षाशास्त्र) - शिक्षा विद्याशाखा

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

प्रयागराज

सेक्टर -एफ , शन्तिपुरम, फाफामऊ, प्रयागराज

www.uprtou.ac.in

पंजीकरण-प्रपत्र

पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रद्धा सुमन दिवस

राष्ट्रीय संगोष्ठी सह-व्याख्यान

दिनांक - 10 फरवरी, 2021

दोपहर 12:00 - अपराह्न 02:00 तक

नाम.....

पद नाम.....

संस्था का नाम व पता.....

.....

.....

मोबाइल नंबर.....

ई-मेल.....

शोधपत्र का शीर्षक.....

.....

.....

सह लेखकों के नाम (यदि कोई हो).....

हस्ताक्षर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रद्धा सुमन दिवस

राष्ट्रीय संगोष्ठी सह-व्याख्यान

दिनांक - 10 फरवरी, 2021

दोपहर 12:00 - अपराह्न 02:00 तक

आयोजन स्थल

तिलक शास्त्रार्थ सभागार, सरस्वती परिसर

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

शांतिपुरम (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, प्रयागराज - 211021

सेवा में,

_____

_____

_____

मुख्य अतिथि एवं वक्ता

श्री अतुल कोठारी

राष्ट्रीय सचिव,

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

संयोजक

प्रो0 (डॉ0) जी0 एस0 शुक्ल

निदेशक,

पं0 दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ

ईमेल : pddduspuprtou@gmail.com

आयोजक

पं0 दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश - 211021

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय अधिनियम संख्या 10 के द्वारा सन् 1999 में हुई। विगत 21 वर्षों से विश्वविद्यालय अनवरत रूप से समाज के शिक्षा से वंचित जनसमुदाय, महिलाओं, सेवारत व्यक्तियों तथा दूरदराज क्षेत्रवासियों तक उच्च शिक्षा की ज्योति का प्रकाश पहुँचाकर आम जनमानस में आशा एवं नवोत्साह का संचार कर रहा है। छात्र जहाँ, हम वहाँ, सबको शिक्षा सबको ज्ञान, सबका साथ सबका विकास, गुरुकुल से छात्र कुल के मंत्र को अपनी कार्यशैली में आत्मसात करते हुए उत्तर प्रदेश का एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय अपने 127 शैक्षणिक कार्यक्रमों, 1150 से अधिक अध्ययन केंद्र तथा 12 क्षेत्रीय केंद्रों के माध्यम से रोजगारपरक एवं गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का प्रदेशव्यापी प्रचार-प्रसार में अनवरत प्रगति पथ पर अग्रसर है। प्रदेश व्यापी विभिन्न शैक्षणिक, प्रशासनिक गतिविधियों, कार्यक्रमों के सुगमतापूर्ण संचालन हेतु विश्वविद्यालय मुख्यालय प्रयागराज में गंगा, यमुना एवं सरस्वती प्रांगण की स्थापना की गई है। डिजिटल इंडिया मिशन की दिशा में विश्वविद्यालय निरंतर अग्रसर है अपने स्थापना काल से ही प्राचीन भारतीय परंपराओं के साथ समसामयिक नवीनतम कला-कौशल कलेवर से आच्छादित गुणवत्तापरक, रोजगारपरक, आत्मनिर्भरता की ओर उन्मुख उच्च शिक्षा प्रदान करके ऐसी युवा शक्तियों का निर्माण परिष्कार सम्बर्द्धन हेतु कृत संकल्पित है, जो भविष्य में विषमतामुक्त, भयमुक्त, भाई-भतीजावाद रहित, समता, ममता, समरसता युक्त प्रबुद्ध मानव समाज के प्रति दृढ़ समर्पित होकर एक नवीन सशक्त राष्ट्र का निर्माण करने में अपना श्रेष्ठतम समर्पण कर सके।

संगोष्ठी सह-व्याख्यान

आज प्राच्य जगत पश्चात्य जगत के मध्य में एक वैचारिक द्वन्द विद्यमान है विश्व के विकासशील राष्ट्र पाश्चात्य संस्कृति के अवयव भौतिकतावाद, पूँजीवाद, साम्यवाद के मकड़जाल में कराहते हुए एक वैकल्पिक मार्ग की खोज में है जहाँ पाश्चात्य विचारधारा से पोषित समाज मुक्त हो ऐसा कौन सा पथ है? यह पथ किस मूल अवधारणा पर आधारित हो? समाज का वैचारिक ताना-बाना एवं संरचना किन सिद्धांतों पर आधारित हो जहाँ समता, ममता, समरसता युक्त समाज हो, इसका एकमात्र विकल्प है तो वह भारतीय संस्कृति से उद्भूत एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी द्वारा विकसित एकात्म मानववाद की विचार-धारा है। यही एकमात्र विचारधारा है जिस पर अग्रसर होकर "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एवं "वसुधैव कुटुंबकम्" का लक्ष्य पाया जा सकता है। आज उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण के युग में पं0 दीन दयाल उपाध्याय की विचारधारा को आत्मसात किए बगैर मानव कल्याण की कल्पना कोरी है। पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने विकेंद्रीकरण का विकल्प, अंत्योदय और अर्थायाम की संकल्पना दिया। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुकरण न केवल समुन्नत राष्ट्र एवं आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर शान्ति एवं विकास का पथ भी प्रशस्त होगा।

अतः यह आवश्यक है कि भारतीय जनमानस को पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के जीवन के विभिन्न बहुआयामों से पूर्णतः अवगत कराया जाए, जिससे उनके व्यक्तित्व की विशिष्टताओं यथा अदम्य साहस, निर्भीकता एवं विपरीत परिस्थितियों में भी अभीष्ट समग्रता को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा तथा पुरुषार्थ से जन समुदाय प्रेरणा ले सकें एवं अपने जीवन में भी उस को आत्मसात कर सके। यह शोध पीठ परम पुनीत उद्देश्य को लेकर राष्ट्र हित के विभिन्न आवश्यक उपादानों को अपना सहयोग देने का प्रयास करने हेतु कृत संकल्पित है। इसी मन्तव्य से उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, फाफामऊ, प्रयागराज में स्थापित पं0 दीन दयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के तत्वावधान में पूर्व दार्शनिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक चिन्तक पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के पुण्य तिथि की पूर्व संध्या पर दिनांक 10 फरवरी 2021 को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित श्रद्धा सुमन दिवस राष्ट्रीय संगोष्ठी सह-व्याख्यान का आयोजन सुनिश्चित हुआ है। उक्त कार्यक्रम का आयोजन ऑन लाइन एवं ऑफ लाइन दोनों माध्यम से उक्त तिथि पर दोपहर 12:00-अपराह्न 02:00 तक किया जाएगा।

पंजीकरण व पंजीकरण शुल्क-

इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण निःशुल्क है। समस्त प्रतिभागियों को ऑनलाइन पंजीकरण प्रारूप के माध्यम से पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। पंजीकरण कराने वाले तथा पृष्ठ पोषण (Feed back) प्रदान करने वाले प्रतिभागियों को ही ई-प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा।

पंजीकरण लिंक:- https://forms.gle/MFwQRKa99mZPGi148

व्हाट्स ऐप ग्रुप लिंक:- https://chat.whatsapp.com/E2L2BYbcZ6w1BsnoKyS605

आनलाइन प्रतिभागिता लिंक :- https://us02web.zoom.us/j/84188306527?pwd=QVFSak5RMi9CNDZwTzFRMXhJb0Iwdz09

लॉगिन आई.डी.:- 84188306527

पासकोड : 385006

आलेख/शोधपत्र

संगोष्ठी सह-व्याख्यान से सम्बन्धित मौलिक आलेख एवं शोध-पत्र आमन्त्रण की अंतिम तिथि 10 फरवरी 2021 है। हिन्दी में प्रपत्र के लिए Kuritdev 010 फॉण्ट साइज 14, लाईन स्पेसिंग 1.5 तथा अंग्रेजी में प्रपत्र के लिए Times New Roman, फाण्ट साइज 12, लाईन स्पेसिंग 1.5 में होना चाहिए। आलेख या शोध-पत्र लगभग 3000 शब्दों में होना चाहिए। गुणवत्ता की दृष्टि से चयनित आलेखों/शोध-पत्रों का प्रकाशन विश्वविद्यालय द्वारा ISBN सहित प्रोसीडिंग के रूप में किया जायेगा। आलेख/शोध पत्र ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जायेंगे। प्रपत्र प्रेषित करने हेतु ई-मेल pddduspuprtou@gmail.com है।

सम्पर्क सूत्र

संगोष्ठी सह-व्याख्यान से सम्बन्धित जानकारी हेतु -

ई-मेल : pddduspuprtou@gmail.com पर अथवा मो0 नं0-

प्रो0 (डॉ) जी0 एस0 शुक्ल (07525048001)

डॉ संजय कुमार सिंह (07525048007)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार (07525048100) पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आयोजन स्थल

राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान से सम्बन्धित कार्यक्रम विश्व-विद्यालय के सरस्वती परिसर के शैक्षणिक भवन में अवस्थित तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित होगा।

सलाहकार समिति

1. प्रो0 ओम जी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा
2. प्रो0 पी0 पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा
3. प्रो0 आशुतोष गुप्ता, निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा
4. प्रो0 सत्यपाल तिवारी, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
5. प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय, प्रभारी, शिक्षा विद्याशाखा
6. प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी, प्रभारी, समाज विज्ञान विद्याशाखा
7. प्रो0 सन्तोषा कुमार, समाज विज्ञान विद्याशाखा
8. प्रो0 रूचि बाजपेयी, मानविकी विद्याशाखा
9. प्रो0 विनोद कुमार गुप्त, मानविकी विद्याशाखा
10. डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता, कुलसचिव
11. श्री ए0 के0 सिंह वित्त अधिकारी
12. श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, परीक्षा नियंत्रक
13. डॉ0 सुखराम मथुरिया, उप कुलसचिव

आयोजन समिति

1. डॉ0 आनन्दा नन्द त्रिपाठी
2. डॉ0 जी0के0 द्विवेदी
3. डॉ0 दिनेश सिंह
4. डॉ0 राम जनम मौर्या
5. डॉ0 श्रुति
6. डॉ0 मीरा पाल
7. डॉ0 ज्ञान प्रकाश यादव
8. डॉ0 देवेश रंजन त्रिपाठी
9. डॉ0 साधना श्रीवास्तव
10. डॉ0 सतीष चन्द्र जैसल
11. श्री सुनील कुमार
12. डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी
13. डॉ0 सी0के0 सिंह
14. डॉ0 दीप शिखा श्रीवास्तव
15. श्री रमेश चन्द्र यादव
16. डॉ0 अभिषेक सिंह
17. श्री अमित कुमार सिंह
18. श्री मनोज कुमार
19. डॉ0 यू0एन0 तिवारी
20. डॉ0 नीता मिश्रा
21. श्री राजमणि पाल
22. श्री परविन्द कुमार वर्मा
23. डॉ0 स्मिता अगवाल
24. डॉ0 अतुल मिश्रा
25. डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता
26. डॉ0 गौरव संकल्प
27. डॉ0 अब्दुल रहमान
28. डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप सिंह
29. डॉ0 धर्मवीर सिंह
30. डॉ0 रवीन्द्र प्रताप सिंह
31. श्री राजेश गौतम
32. डॉ0 अमरेन्द्र यादव
33. डॉ0 दीपा चौबे
34. डॉ0 सुषमा चौहान
35. श्री अरविन्द मिश्रा

मुक्त विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी को मातृशोक

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के वित्त अधिकारी एवं हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज के सचिव श्री अजय कुमार सिंह की माता जी के निधन पर उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शोक व्यक्त किया गया। कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने शोक प्रस्ताव पढ़ा तथा विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यों ने 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

04 फरवरी, 2021

चौरीचौरा शताब्दी समारोह

मुविवि के क्षेत्रीय केन्द्र गोरखपुर द्वारा शहीदों की स्मृति में पुषांजलि एवं हस्ताक्षर अभियान

दिनांक 04 फरवरी, 2021 को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र गोरखपुर द्वारा चौरीचौरा शताब्दी समारोह के अवसर पर **शहीदों की स्मृति में पुषांजलि एवं हस्ताक्षर अभियान** का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय केन्द्र गोरखपुर के क्षेत्रीय केन्द्र समन्वयक श्री प्रवीन कुमार, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं के साथ–साथ गणमान्य नागरिकों ने प्रतिभाग किया।

गैर-कर राजस्व में सुधार का भरोसा: सीतारमण पेज 13 | एक संक्रमित मिला, सभी अभ्यास मैच रोके पेज 14

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

ट्वीट हटाया
हर मुद्दे पर बेबाकी से राय रखने वाली अभिनेत्री कंगना रणौत के कुछ ट्वीट को ट्विटर ने हटा दिया है। ट्विटर का कहना है कि कंगना पोस्ट में अभद्र भाषा को लेकर बने नियमों का उल्लंघन किया था।

शुक्रवार, 05 फरवरी 2021, प्रयागराज, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com वर्ष 12, अंक 30, 16 पेज, मूल्य ₹6.00, माघ कृष्ण पक्ष, अष्टमी, विक्रम सम्वत् 2077

111 केंद्रों पर होगी परीक्षा

मुक्त विश्वविद्यालय

प्रयागराज | निज संवाददाता

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की दिसंबर सत्र की परीक्षाएं ऑफलाइन मोड में नौ फरवरी से शुरू होंगी। परीक्षा सूबे के 111 केंद्रों पर आयोजित की जाएगी। परीक्षार्थी शुक्रवार यानी पांच फरवरी से विश्वविद्यालय की वेबसाइट से अपने प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकेंगे। ऑफलाइन परीक्षा कराने का निर्णय कुलपति की अध्यक्षता में हुई परीक्षा समिति के बैठक में लिया गया है।

परीक्षा नियंत्रक देवेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार कोविड-19 गाइडलाइन के अनुपालन में परीक्षाएं कराई जाएंगी। दो पालियों में होने वाली परीक्षा में प्रदेशभर में तकरीबन 37 हजार परीक्षार्थी शामिल होंगे। पहली पाली की परीक्षा सुबह नौ 9 से 12 बजे और दूसरी पाली की परीक्षा दोपहर एक से शाम 4 बजे तक कराई जाएगी।

प्रयागराज में जेल समेत 21 केंद्रों पर होगी परीक्षा

प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र के अंतर्गत नैनी जेल समेत 21 केंद्रों पर परीक्षा होगी। आगरा में सात, अयोध्या में आठ, आजमढ में नौ परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। जबकि बरेली में केवल दो केंद्र ही बनाए गए हैं। इसके अलावा गाजियाबाद में तीन, गोरखपुर में 18, झांसी में पांच, कानपुर में सात, लखनऊ में 15, मेरठ में पांच केंद्र बनाए गए हैं। जबकि, वाराणसी में 16 परीक्षा केंद्रों का निर्धारण किया गया है।

महानगर
वर्ष 24 | अंक 231 | पृष्ठ : 16
मूल्य : छह रुपये
6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

अमर उजाला

प्रयागराज
शुक्रवार, 5 फरवरी 2021

amarujala.com यात्रीगण ध्यान दें... कोविड अभी खत्म नहीं हुआ है, पैसेंजर ट्रेन चलने में वक्त लगेगा...13 उत्तर प्रदेश

न्यूज डायरी

मुक्त विश्वविद्यालय की परीक्षाएं नौ से

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के दिसंबर सत्र की परीक्षाएं नौ फरवरी से प्रदेश के 111 केंद्रामें आयोजित की जाएंगी। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस पर अंतिम मुहर भी लग गई है। परीक्षा ऑफलाइन मोड में होगी और शुक्रवार को परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र भी जारी कर दिए जाएंगे। अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से अपने प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकेंगे। प्रदेश भर से लगभग 37 हजार परीक्षार्थी इसमें शामिल होंगे। परीक्षा दो पालियों सुबह नौ से दोपहर 12 और अपराह्न एक से शाम पांच बजे तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा के लिए प्रयागराज में सर्वाधिक 21 केंद्र बनाए गए हैं। साथ ही कैदियों के लिए नैनी सेंट्रल जेल को भी परीक्षा केंद्र बनाया गया है। ब्यूरो

प्रयागराज, शुक्रवार
5 फरवरी, 2021
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 6.00
पृष्ठ 18

दैनिक जागरण

www.jagran.com
उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

ब्याज दरों में नरमी पर ब्रेक लगने के आसार 13 | अगले साल सेंट्रल विस्टा एवेन्यू पर होगी गणतंत्र दिवस परेड 15

9 फरवरी से ऑफलाइन मोड में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की परीक्षा कराने की समिति की मंजूरी

पीएचडी प्रवेश परीक्षा में 246 अभ्यर्थियों को कामयाबी

13 विषयों में 47 सीटों पर प्रवेश के लिए 600 ने की थी दावेदारी, 18 फरवरी को विवि प्रशासन जारी करेगा इंटरव्यू की तारीख

जागरण विशेष

गुरुदीप त्रिपाठी • प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने पीएचडी प्रवेश परीक्षा के नतीजे गुरुवार देर शाम जारी कर दिए। 13 विषयों में कुल 47 सीटों के सापेक्ष 246 ने सफलता हासिल की है।

कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की पहल पर मुक्त विवि में 12 साल के लंबे इंतजार के बाद सत्र 2020-21 में पीएचडी प्रवेश की प्रक्रिया शुरू की गई है। 26 नवंबर से ऑनलाइन आवेदन, रजिस्ट्रेशन -फीस जमा करने की अंतिम तिथि 26 दिसंबर तो आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर तय थी। 13 विषयों में कुल 47 सीटों के सापेक्ष प्रदेशभर से 600 से अधिक लोगों ने आवेदन किया। गुरुवार को नतीजे जारी कर दिए गए।

3 केंद्र मुख्य परिसर में ही बनाए गए थे

18 फरवरी को इंटरव्यू की तारीख भी होगी जारी

30 जनवरी को ऑफलाइन मोड में हुई थी परीक्षा

71 फीसद अभ्यर्थियों ने लिया था हिस्सा

किन विषयों में कितने सफल

कैंपस के शिक्षक होंगे गाइड

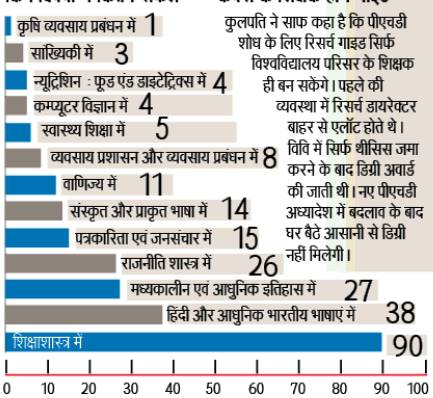

कुलपति ने साफ कहा है कि पीएचडी शोध के लिए रिसर्च गाइड सिर्फ विश्वविद्यालय परिसर के शिक्षक ही बन सकेंगे। पहले की व्यवस्था में रिसर्च डायरेक्टर बाहर से एलॉट होते थे। विवि में सिर्फ थीसिस जमा करने के बाद डिग्री अवार्ड की जाती थी। नए पीएचडी अध्यादेश में बदलाव के बाद घर बैठे आसानी से डिग्री नहीं मिलेगी।

जानकारी आधिकारिक वेबसाइट पर

http://www.uprtou.ac.in/pre_phd_entrance_result_2021.phd से परिणाम देख सकते हैं।

अब दूसरे चरण की प्रक्रिया के तहत इंटरव्यू के बाद सभी अंकों को जोड़कर प्रवेश दिया जाएगा। प्रवेश प्रक्रिया पारदर्शी ढंग से कराई जाएगी।

– प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति।

प्रदेश में 111 केंद्रों पर होंगी परीक्षाएं

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के दिसंबर सत्र की परीक्षाएं नौ फरवरी से होंगी। यह 24 मार्च तक चलेंगी। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की अध्यक्षता में परीक्षा समिति की बैठक में सर्वसम्मति से ऑफलाइन परीक्षाओं को अंतिम मंजूरी मिल गई है। प्रदेश में कुल 111 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा कराई जाएगी। परीक्षा नियंत्रक देवेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि कोविड-19 गाइडलाइन के अनुपालन कराया जाएगा। दो पालियों में होने वाली परीक्षा में प्रदेशभर में तकरीबन 37 हजार परीक्षार्थी शामिल होंगे। पहली पाली की परीक्षा सुबह नौ से 12 बजे और दूसरी पाली दोपहर एक से शाम चार बजे तक कराई जाएगी। शुक्रवार से विवि की आधिकारिक वेबसाइट से एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकेंगे। प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र में सर्वाधिक 21 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षाएं कराई जाएंगी। यहां कैदियों के लिए नैनी सेंट्रल जेल को भी परीक्षा केंद्र बनाया गया है। आगरा क्षेत्रीय केंद्र के अंतर्गत सात, अयोध्या में आठ, आजमगढ़ में नौ परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। बरेली में केवल दो केंद्र ही हैं। गाजियाबाद में तीन, गोरखपुर में 18, झांसी में पांच, कानपुर में सात, लखनऊ में 15, मेरठ में पांच केंद्र बनाए गए हैं। वाराणसी में 16 परीक्षा केंद्रों का निर्धारण किया गया है। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने बताया कि प्रदेश के 111 केंद्रों पर ऑफलाइन मोड में परीक्षाएं कराई जाएंगी। कोविड-19 गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए नकल रोकने के लिए सख्ती भी बरती जाएगी।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

08 फरवरी, 2021

15वें दीक्षान्त समारोह की तैयारी की समीक्षा बैठक

मा0 कुलपति जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के 15वें दीक्षान्त समारोह की तैयारी की समीक्षा बैठक आयोजित

समीक्षा बैठक करते हुए मा0 कुलपति जी

विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के 15वें दीक्षान्त समारोह (दिनांक : 04 मार्च, 2021) की तैयारी की समीक्षा बैठक दिनांक 08 फरवरी, 2021 को पूर्वान्ह 11:30 बजे एक बैठक विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ समागार में आहूत की गयी। बैठक में सभी 18 समितियों के समन्वयक, सह–समन्वयक, संयोजक एवं सदस्यगण उपस्थित रहें।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

08 फरवरी, 2021

परीक्षा केन्द्र के केन्द्राध्यक्षों एवं समन्वयकों की समीक्षा बैठक

विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग द्वारा परीक्षा सत्र दिसम्बर, 2020 के सन्दर्भ में दिनांक : 08 फरवरी, 2021 को विश्वविद्यालय के सभी समन्वयक, परीक्षा केन्द्र के केन्द्राध्यक्षों एवं समन्वयकों की Zoom App के माध्यम से एक बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की। कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि परीक्षा को सभी केन्द्राध्यक्ष पारदर्शिता एवं शुचितपूर्ण ढंग से आयोजित कराये। सभी परीक्षा केन्द्रों पर पर्याप्त मात्रा में शीतल जल एवं प्रकाश की व्यवस्था एवं कोविड–19 के नियमों का पालन पूर्णरूप से किया जाय। परीक्षा नियंत्रक श्री डी0पी0 सिंह ने कहा कि मेरठ, गाजियाबाद, आगरा, कानपुर, लखनऊ, बरेली, गोरखपुर, अयोध्या झांसी एवं प्रयागराज क्षेत्रीय केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले अन्य परीक्षा केन्द्रों पर सभी जगह परीक्षायें दिनांक 09 फरवरी, 2021 से प्रारम्भ होगी। केन्द्राध्यक्षों की निगरानी में पर्यवेक्षकों एवं उड़ाकादलों ने विभिन्न परीक्षा केन्द्रों का दौरा करेंगे।

मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

परीक्षा नियंत्रक श्री डी0पी0 सिंह

केन्द्राध्यक्षों को सम्बोधित करते हुए मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

बुधवार, 10 फरवरी 2021

मुविवि में दीनदयाल उपाध्याय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आज

दस फरवरी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रद्धासुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सह व्याख्यान आयोजित होगा।

प्रयागराज संवाददाता। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ के तत्वावधान में बुधवार दस फरवरी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रद्धासुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सह व्याख्यान आयोजित होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के निदेशक तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक प्रो गिरिजा शंकर शुक्ल ने बताया कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी होंगे। जबकि अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह करेंगे। प्रोफेसर शुक्ल ने बताया कि आज प्राच्य जगत एवं पाश्चात्य जगत के मध्य एक वैचारिक द्वंद्व विद्यमान है। विश्व के विकासशील राष्ट्र पाश्चात्य संस्कृति के अवयव भौतिकता वाद, पूंजीवाद, साम्यवाद के मकड़जाल में कराहते हुए एक वैकल्पिक मार्ग की खोज में हैं। ऐसी स्थिति में आज उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण के युग में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा को आत्मसात किए बगैर मानव कल्याण की कल्पना कोरी है। राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान से जुड़ने के लिए जिज्ञासुओं को ऑनलाइन मंच भी प्रदान किया गया है।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

10 फरवरी, 2021

मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय अतिथिगण।

पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री अतुल कोठारी जी एवं मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयाल : कोठारी

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में पं0 दीन दयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की तरफ से दिनांक 10 फरवरी, 2021 को पं0 दीन दयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर श्रद्धा सुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह–व्याख्यान का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव, श्री अतुल कोठारी जी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन पं0 दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के निदेशक प्रो0 जी0एस0 शुक्ला ने किया, अनुसंधान पीठ के सचिव डॉ0 संजय कुमार सिंह ने अतिथि परिचय तथा सह–सचिव डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने संचालन किया। समाचार संकलन डॉ0 शिवेन्द्र सिंह ने किया इस कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में समस्त निदेशकगण, आचार्य, सह–आचार्य, सहायक आचार्यगण, शैक्षणिक परामर्शदाता एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण के साथ–साथ वर्चुअल मोड में सैकड़ों प्रतिभागी उपस्थित रहें।

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार

कार्यक्रम का करते हुए संचालन डॉ0 सुरेन्द्र कुमार एवं मंचासीन माननीय अतिथिगण

सभागार मे उपस्थित विश्वविद्यालय के शिक्षक, निदेशक, अधिकारी, छात्र–छात्रायें एवं कर्मचारीगण

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

पं0 दीन दयाल उपाध्याय श्रद्धा सुमन दिवस राष्ट्रीय संगोष्ठी सह–व्याख्यान

दिनांक – 10.02.2021

संरक्षक:– प्रो0 के0 एन0 सिंह (मा0 कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज)

मुख्य अतिथि / मुख्य वक्ता :– श्री अतुल कोठारी जी (राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली)

संयोजक
प्रो0 (डा0) जी.एस.शुक्ल

आयोजन सचिव
डा0 संजय कुमार सिंह

आयोजन सह–सचिव
डा0 सुरेन्द्र कुमार

आयोजन स्थल :– तिलक शास्त्रार्थ सभागार, सरस्वती परिसर

मुख्य अतिथि श्री अतुल कोठारी जी को नारियल भेंट कर उनका स्वागत करती हुई डॉ0 दीपा चौबे।

मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी
को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करती हुई डॉ0 सुषमा चौहान।

कार्यक्रम के संयोजक एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय शोधपीठ के निदेशक प्रो0 जी.एस.
शुक्ल जी को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करते हुए श्री अमित सिंह।

सभागार में उपस्थित विश्वविद्यालय के शिक्षक, निदेशक, अधिकारी, छात्र–छात्रायें एवं कर्मचारीगण

प्रो0 जी.एस. शुक्ल

अतिथि स्वागत एवं विषय प्रर्वतन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के निदेशक प्रो0 जी. एस. शुक्ल ने कहा कि पं0 दीन दयाल उपाध्याय एक महान संगठनकर्ता , गम्भीर दार्शनिक एवं गहन चिंतक वाले कद्दावर व्यक्तित्व के धनी थे। इस पुण्यतिथि के अवसर पर हृदय की गहराइयों से हार्दिक श्रद्धांजलि सादर अभिव्यक्त करता हूँ।

सभागार में उपस्थित विश्वविद्यालय के शिक्षक, निदेशक, अधिकारी, छात्र–छात्रायें एवं कर्मचारीगण

दीनदयाल उपाध्याय पुस्तिका का विमोचन

दीनदयान उपाध्याय पुस्तिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री अतुल कोठारी जी, मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी तथा साथ में कार्यक्रम के संयोजक एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के निदेशक प्रो0 जी.एस. शुक्ल

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता का उद्बोधन

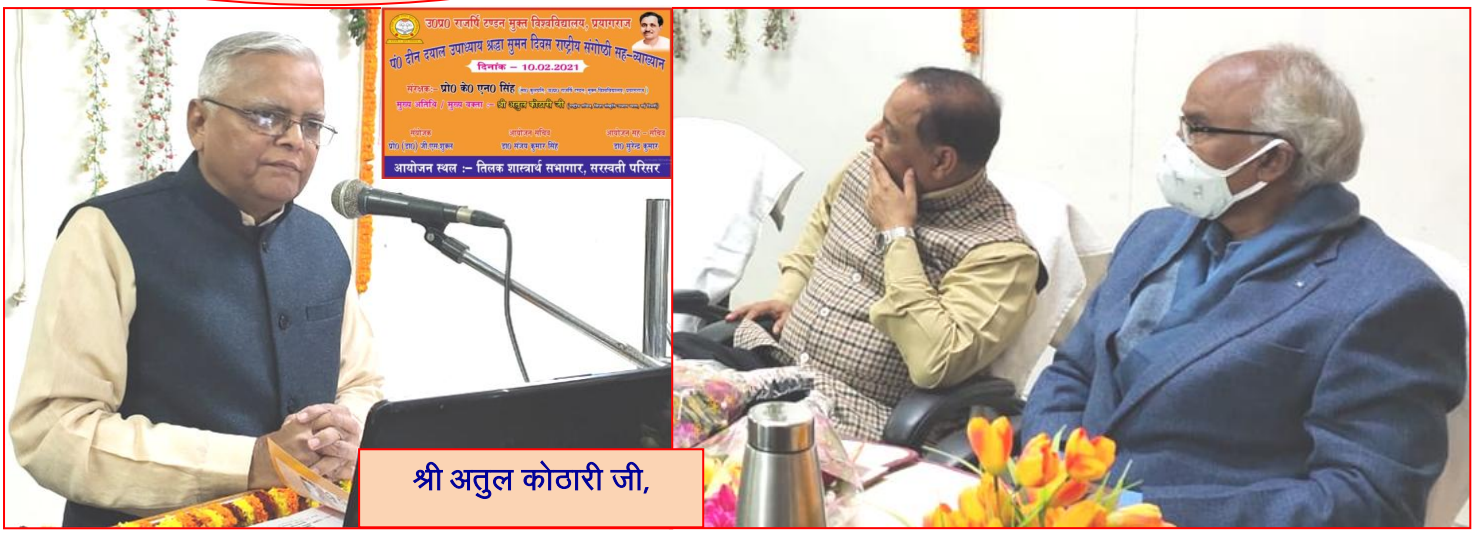

श्री अतुल कोठारी जी,

अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयाल : कोठारी

मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा कार्य करने की शैली अत्यंत उत्कृष्ट थी। पंडित उपाध्याय का जीवन दर्शन उच्च कोटि का था। वह अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे।

श्री कोठारी ने कहा कि जैसा उनका नाम था वैसे ही उनके गुण थे। दीन हीन शोषित पीड़ित व्यक्तियों के लिए वह मसीहा थे। नियम और कानून का जीवन में पूर्ण रुप से पालन करते थे। नागरिक कर्तव्यों का उन्होंने जीवन भर पालन किया। पंडित उपाध्याय ने छोटी उम्र में बहुत कष्ट झेले लेकिन अपने लिए कभी किसी से कुछ नहीं मांगा।

श्री कोठारी ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर स्थापित पीठ की सराहना करते हुए कहा कि यह पीठ अच्छे कार्य करने का माध्यम बनेगी। मुक्त विश्वविद्यालय इसका प्रारंभ गोद लिए हुए गांव से कर सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को इन गांवों तक ले जायें।श्री कोठारी ने मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में मुक्त विश्वविद्यालय ने चुनौती को अवसर में बदल दिया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने कोरोना काल में 2 दिन का वेतन देकर सराहनीय कार्य किया है।

उन्होंने कहा कि त्याग और सेवा दीनदयाल जी के संपूर्ण जीवन में देखने को मिलती है। वह बहुत अच्छे चिंतक, विचारक एवं विद्वान थे। एकात्म मानव दर्शन पर इस पीठ को काम करना चाहिए। एकात्म मानववाद शिक्षा, पर्यावरण एवं समाज के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है।

अध्यक्षीय उद्बोधन

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

प्रत्येक व्यक्ति की भावना का सम्मान होना चाहिए : प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय एक टापू बन कर न रहें। जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं हैं उस पर खरा उतरने का प्रयास करें। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि समाज के निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की पीड़ा को समझना होगा। हर व्यक्ति की भावना का सम्मान होना चाहिए तथा सामूहिकता का भाव होना चाहिए। यही अंत्योदय है, यही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का दर्शन है।

अतिथि सम्मान

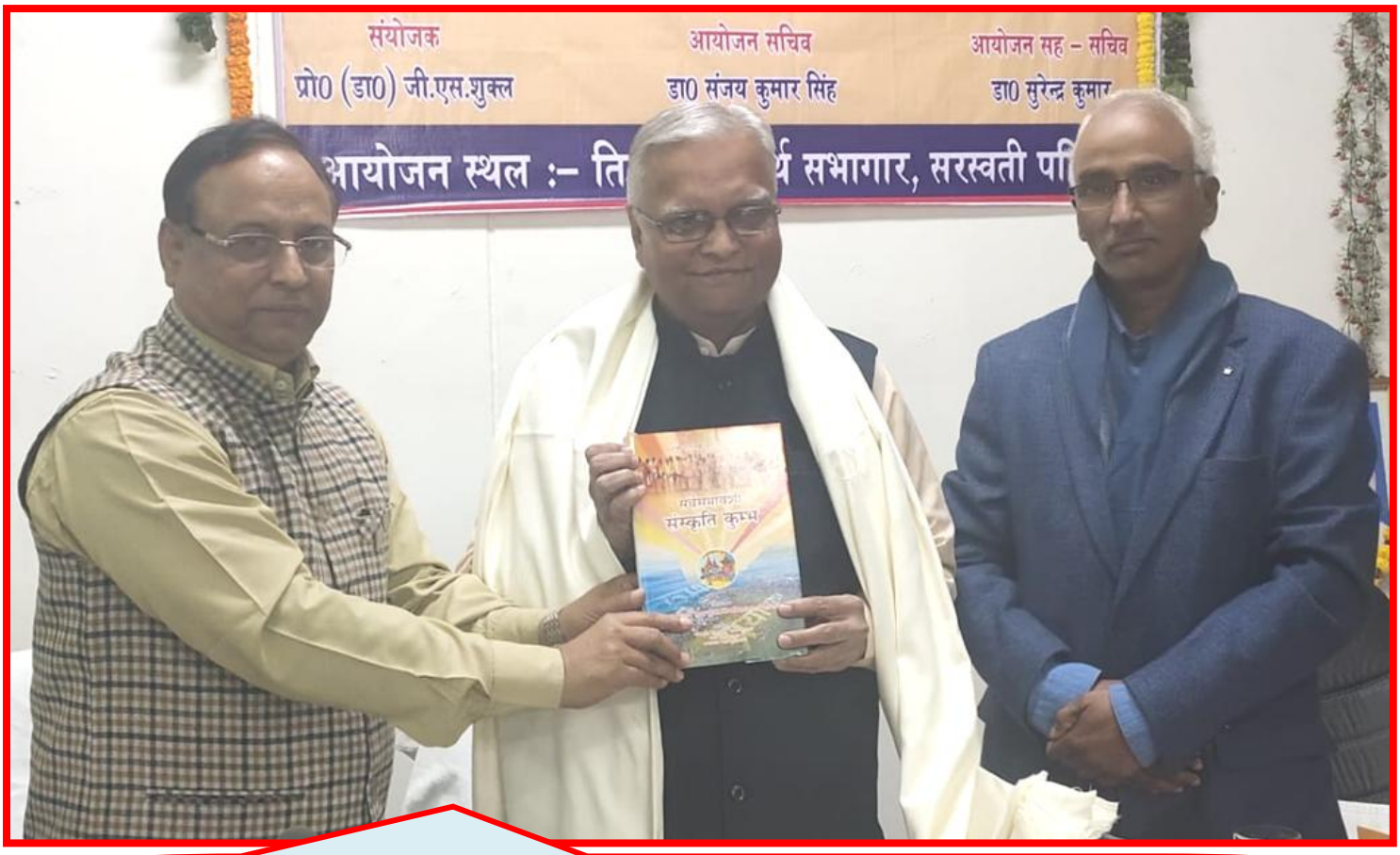

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री अतुल कोठारी जी को अंगवस्त्र एवं सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ की पुस्तक भेंट कर उनका सम्मान करते हुए मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी तथा साथ में कार्यक्रम के संयोजक एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ के निदेशक प्रो0 जी.

सभागार में उपस्थित विश्वविद्यालय के शिक्षक, निदेशक, अधिकारी, छात्र–छात्रायें एवं कर्मचारीगण

कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोंगो ने उत्तराखण्ड में ग्लेशियर पिघलने से हुई दुर्घटना में मारे गये लोंगो के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन धारण किया।

राष्ट्रगान के समय खड़े मा0 अतिथि, प्रतिभागी एवं विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण।

प्रयागराज, गुरुवार
11 फरवरी, 2021
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 6.00
पृष्ठ 16

दैनिक जागरण

www.jagran.com
उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

पेट्रोल की कीमत घटने की संभावना नहीं 13
ट्रंप के खिलाफ महाभियोग की संवैधानिकता पर सीनेट की मुहर 16

6 माघ मेला 2021 तीरथ पतिहिं आव सब कोई
www.jagran.com
दैनिक जागरण
प्रयागराज, 11 फरवरी, 2021

अब पंडित दीनदयाल पर शोध करेगा मुविवि

गुरुदीप त्रिपाठी • प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय (मुविवि) में चालू शैक्षणिक सत्र से एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर भी शोध होगा। कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में कार्यपरिषद ने सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

पं.दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन से नई पीढ़ी को परिचित कराने के लिए मुक्त विवि समेत 13 राज्य विश्वविद्यालयों में शोध पीठ की स्थापना की गई थी। इसके लिए 50 लाख का ग्रांट भी दिया जाना था। हालांकि, अब तक यह अनुदान नहीं मिला है। पीठ सेमिनार और गोष्ठियों तक ही सीमित थी। बुधवार को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के अखिल भारतीय मंत्री अतुल कोठारी ने इसका अनौपचारिक उद्घाटन भी कर दिया। कुलपति प्रो. केएन सिंह की पहल पर पंडित दीनदयाल की पुण्यतिथि से पूर्व पीठ के तहत शोध कराने का फैसला हुआ है। विवि में 13 साल बाद चालू सत्र में पीएचडी में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

गांव-गांव चलेगा अभियान : शोध पीठ के तहत पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों पर आधारित अभियान गांव-गांव में शुरू कराया जाएगा। किसी न किसी गांव में हर साल अंत्योदय की अवधारणा साकार की जाएगी। ग्राम पंचायत स्तर पर जनजागरण अभियान भी चलाया जाएगा। शोधार्थी फील्ड वर्क भी करेंगे। इस पीठ से उन गांवों को भी जोड़ा जाएगा, जिन्हें विश्वविद्यालय प्रशासन की तरफ से गोद लिया गया है।

> पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ नए कलेवर में नजर आएगी। इस पीठ के तहत चालू सत्र से शोध को मंजूरी मिल गई है। शोधार्थी फील्ड में काम करेंगे और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपने को साकार करेंगे।
>
> **प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति।**

अपने आचरण से सीख देते थे पंडित दीनदयाल : कोठारी

जासं, प्रयागराज : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की तरफ से बुधवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित उपाध्याय अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने भी संबोधित किया। प्रो. गिरजा शंकर शुक्ल, डॉ. संजय कुमार सिंह, डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. अरुण गुप्ता रहे।

भीगे कपड़े पहन कर ही निकल पड़े थे दीनदयाल

जासं, प्रयागराज : शिक्षा, साहित्य, कला, विधि और राजनीति के गढ़ प्रयागराज (पूर्ववर्ती इलाहाबाद) से एकात्मवाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय का गहरा नाता था। यहीं उन्होंने बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग (बीटी) भी पूरी की। सत्र 1941-42 में राजकीय केंद्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान के छात्रावास में रहे थे। वह कई बार यहां आए। स्वयंसेवकों के साथ बैठक करने के साथ ही उनके घर भोजन के लिए भी जाते थे।

कर्नलगंज के पूर्व पार्षद राधेकृष्ण गोस्वामी कहते हैं कि वर्ष 1966 में पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रयागराज आए थे। एक कार्यक्रम से लौटते समय बारिश में भीग गए। उन्हें स्वयंसेवक महजनी टोला स्थित संघ कार्यालय ले गए। वहीं पंखा चलाकर उनका धोती-कुर्ता सुखाने की कोशिश की गई। धोती तो जैसे तैसे सूख गई पर कुर्ता नहीं सूख पाया। इसी बीच ट्रेन का समय हो गया। उन्हें दिल्ली जाना था। झट से झोले में रखा दूसरा कुर्ता निकाला लेकिन वह भी भीग गया था। बिना समय लगाए उन्होंने भीगा कुर्ता पहन लिया और बोले चलो स्टेशन। यह तो रास्ते में सूख जाएगा। वर्ना ट्रेन छूट जाएगी। स्वयंसेवकों ने कुछ देर बाद की दूसरी ट्रेन से जाने का सुझाव दिया, पर उन्होंने कहा कि समय का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। इससे दूसरे कार्यक्रम भी प्रभावित होते हैं, जिसका असर बहुत से लोगों पर पड़ता है।

पुण्यतिथि पर विशेष

जन्म- 25 सितंबर 1916
निधन - 11 फरवरी 1968

सत्र 1941-42 में प्रयागराज से की थी बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग

संगठन से लोगों को जोड़ने पर देते थे बल

वरिष्ठ स्वयंसेवक बलरामपुर निवासी सुरेंद्र शुक्ल बताते है कि 1967 में भी दीनदयाल उपाध्याय प्रयागराज आए थे। संघ कार्यालय पर स्वयंसेवकों के साथ बैठक कर संदेश दिया कि आम लोगों को शाखा तक लाने की जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाएं। संघ के प्रति यदि किसी में आशंका हो तो उसका समाधान करें।

हर बात
प्रयागराज
गुरूव

अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयाल : कोठारी

मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर हुआ आयोजन

हर बात संवाददाता

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की तरफ से बुधवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर श्रद्धा सुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा कार्य करने की शैली अत्यंत उत्कृष्ट थी। पंडित उपाध्याय का जीवन दर्शन उच्च कोटि का था। वह अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे।

श्री कोठारी ने कहा कि जैसा उनका नाम था वैसे ही उनके गुण थे। दीन हीन शोषित पीड़ित व्यक्तियों के लिए वह मसीहा थे। नियम और कानून का जीवन में पूर्ण रुप से पालन करते थे। नागरिक कर्तव्यों का उन्होंने जीवन भर पालन किया। पंडित उपाध्याय ने छोटी उम्र में बहुत कष्ट झेले लेकिन अपने लिए कभी किसी से कुछ नहीं मांगा।श्री कोठारी ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर स्थापित पीठ की सराहना करते हुए कहा कि यह पीठ अच्छे कार्य करने का माध्यम बनेगी। मुक्त विश्वविद्यालय इसका प्रारंभ गोद लिए हुए गांव से कर सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को इन गांवों तक ले जायें।श्री कोठारी ने मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में मुक्त विश्वविद्यालय ने चुनौती को अवसर में बदल दिया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने कोरोना काल में 2 दिन का वेतन देकर सराहनीय कार्य किया है।

उन्होंने कहा कि त्याग और सेवा दीनदयाल जी के संपूर्ण जीवन में देखने को मिलती है। वह बहुत अच्छे चिंतक, विचारक एवं विद्वान थे। एकात्म मानव दर्शन पर इस पीठ को काम करना चाहिए। एकात्म मानववाद शिक्षा, पर्यावरण एवं समाज के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है।अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय टापू बन कर न रहें। जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं है उस पर खरा उतरने का प्रयास करें। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि समाज के निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की पीड़ा को समझना होगा। हर व्यक्ति की भावना का सम्मान होना चाहिए तथा सामूहिकता का भाव होना चाहिए। यही अंत्योदय है, यही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का दर्शन है।प्रारंभ में विषय प्रवर्तन कार्यक्रम संयोजक प्रोफेसर गिरजा शंकर शुक्ला ने किया। आयोजन सचिव डॉ संजय कुमार सिंह ने अतिथि परिचय तथा संचालन सह-सचिव डॉ सुरेंद्र कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कोठारी तथा कुलपति प्रोफेसर सिंह ने दीनदयाल उपाध्याय पुस्तिका का विमोचन किया।

आनंदी मेल

(हिन्दी दैनिक) लखनऊ, गुरूवार, 11 फरवरी 2021 R.N.I No.UPHIN/2009/29300 पृष्ठ: 8

मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर हुआ आयोजन

अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयाल-कोठारी

आनंदी मेल संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की तरफ से बुधवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर श्रद्धा सुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे।

उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा कार्य करने की शैली अत्यंत उत्कृष्ट थी। पंडित उपाध्याय का जीवन दर्शन उच्च कोटि का था। वह अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे।श्री कोठारी ने कहा कि जैसा उनका नाम था वैसे ही उनके गुण थे। दीन हीन शोषित पीड़ित व्यक्तियों के लिए वह मसीहा थे। नियम और कानून का जीवन में पूर्ण रुप से पालन करते थे। नागरिक कर्तव्यों का उन्होंने जीवन भर पालन किया। पंडित उपाध्याय ने छोटी उम्र में बहुत कष्ट झेले लेकिन अपने लिए कभी किसी से कुछ नहीं मांगा। श्री कोठारी ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर स्थापित पीठ की सराहना करते हुए कहा कि यह पीठ अच्छे कार्य करने का माध्यम बनेगी। मुक्त विश्वविद्यालय इसका प्रारंभ गोद लिए हुए गांव से कर सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को इन गांवों तक ले जायें।श्री कोठारी ने मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में मुक्त विश्वविद्यालय ने चुनौती को अवसर में बदल दिया।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने कोरोना काल में 2 दिन का वेतन देकर सराहनीय कार्य किया है।उन्होंने कहा कि त्याग और सेवा दीनदयाल जी के संपूर्ण जीवन में देखने को मिलती है। वह बहुत अच्छे चिंतक, विचारक एवं विद्वान थे। एकात्म मानव दर्शन पर इस पीठ को काम करना चाहिए। एकात्म मानववाद शिक्षा, पर्यावरण एवं समाज के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय टापू बन कर न रहें। जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं हैं उस पर खरा उतरने का प्रयास करें। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि समाज के निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की पीड़ा को समझना होगा। हर व्यक्ति की भावना का सम्मान होना चाहिए तथा सामूहिकता का भाव होना प्रारंभ में विषय प्रवर्तन कार्यक्रम संयोजक प्रोफेसर गिरजा शंकर शुक्ला ने किया। आयोजन सचिव डॉ संजय कुमार सिंह ने अतिथि परिचय तथा संचालन सह-सचिव डॉ सुरेंद्र कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कोठारी तथा कुलपति प्रोफेसर सिंह ने दीनदयाल उपाध्याय पुस्तिका का विमोचन किया।

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

05 हिन्दुस्तान प्रयागराज

बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे दीनदयाल उपाध्याय : कोठारी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की तरफ से बुधवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। जीवन सादगी तथा कार्य करने की शैली अत्यंत उत्कृष्ट थी। उपाध्याय का जीवन दर्शन उच्च कोटि का था। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. केएन सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय टापू बन कर न रहें। जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं हैं उस पर खरा उतरने का प्रयास करें।

अमर उजाला

अमर उजाला प्रयागराज

न्यूज डायरी

बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की ओर से बुधवार को दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा काम करने की शैली अत्यंत उत्कृष्ट थी। कुलपति प्रो केएन सिंह ने कहा कि जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं हैं, उस पर खरा उतरने का प्रयास करें। प्रो गिरजा शंकर शुक्ल ने इस मौके पर विचार व्यक्त किए। सचिव डॉ. संजय कुमार सिंह ने अतिथि परिचय तथा संचालन सह सचिव डॉ. सुरेंद्र कुमार ने किया। धन्यवाद कुलसचिव डॉ. अरुण कुमार गुप्ता ने किया। ब्यूरो

चीन में फंसे 16 भारतीय नाविकों की 14 को होगी वापसी

नई दिल्ली । चीन में फंसे 16 भारतीय नाविक की जल्द ही घर वापसी होने वाली है। बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्री मनसुख मांडविया ने जानकारी दी है कि चीनी बंदरगाह में फंसे एमवी अनस्तासिया के 16 भारतीय नाविक 14 फरवरी को वापस आएंगे। उन्होंने कहा कि मालवाहक पोत एमवी अनस्तासिया जापान से आज यात्रा शुरू करने वाला है और 14 फरवरी को भारत पहुंचेगा। एम वी अनस्तासिया पोत काओफिडीयन बंदरगाह पर 20 सितंबर से खड़ा है। इस प्रयास के लिए चीन और शिपिंग कंपनी एमएससी की सराहना की है। इसी सप्ताह चीन के अधिकारियों ने कार्गो पोत पर फंसे एमवी अनस्तासिया के 16 नाविकों को क्रू बदलने की इजाजत दे दी थी।

सहज चेतना

आरक्षण पर सरकार जो भी संभव होगा करेगी- सीएम येदियुरप्पा

बेंगलुरु। बेहतर आरक्षण के लिए राज्य में विभिन्न समुदायों की मांग के बीच, कर्नाटक के मुख्यमंत्री बी एस येदियुरप्पा ने बुधवार को कहा कि उनकी सरकार कानून और संविधान के दायरे में जो भी संभव होगा वह करेगी। उन्होंने एक सवाल के जवाब में यहां संवाददाताओं से कहा, हम संविधान और कानून के दायरे में जो कुछ भी संभव है उसे करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करेंगे। देश के अन्य राज्यों में जो किया गया है, वह मैं यहां कर सकता हूं।मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मामले पर चर्चा की जा रही है और कानूनी विशेषज्ञों, महाधिवक्ता और अन्य महत्वपूर्ण लोगों से परामर्श करने के बाद, सरकार से जो भी संभव हो सकेगा, वो करने की कोशिश करेगी।

वर्ष 12 अंक 131 (हिन्दी दैनिक) प्रयागराज गुरूवार 11 फरवरी 2020 पृष्ठ 8 मूल्य 2-00 रूपया

हिन्दी दैनिक सहज चेतना प्रयागराज पृष्ठ-3 गुरूवार, 11 फरवरी 2021

प्रयागराज

स्वयं के आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयाल: कोठारी

प्रयागराज | सवांददाता

प्रयागराज। प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की ओर से बुधवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर श्रद्धासुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डा. अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा कार्य करने की शैली बहुत ही उत्कृष्ट थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे। डा. कोठारी ने कहा कि जैसा उनका नाम था, वैसे ही उनके गुण थे। दीन, हीन, शोषित, पीड़ित व्यक्तियों के लिए वह मसीहा थे। नियम और कानून का जीवन में पूर्ण रुप से पालन करते थे। डा. कोठारी ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर स्थापित पीठ की सराहना की। कहा कि यह पीठ अच्छे कार्य करने का माध्यम बनेगी। श्री कोठारी ने मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की मुक्त कंठ से सराहना की। कहा कि उनके नेतृत्व में मुक्त विश्वविद्यालय ने चुनौती को अवसर में बदल दिया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने कोरोना काल में दो दिन

यूपी बोर्ड की हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षाएं 24 अप्रैल से

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इन्टरमीडिएट की वर्ष 2021 की परीक्षाएं 24 अप्रैल से संयुक्त रूप से शुरू होंगी। माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज की ओर से बुधवार को परीक्षा से संबंधित विस्तृत कार्यक्रम जारी कर दिया गया। माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के सचिव दिव्यकांत शुक्ल ने वर्ष 2021 की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की बोर्ड परीक्षा की समय सारिणी घोषित की। इस बार बोर्ड की परीक्षाएं 24 अप्रैल 2021 से शुरू होकर 12 मई को समाप्त होंगी। सचिव दिव्यकांत शुक्ल ने बताया कि हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएं एक साथ 24 अप्रैल से प्रारम्भ होंगी। हाईस्कूल की परीक्षा 12 कार्य दिवसों में होकर 10 मई को समाप्त होंगी। जबकि इण्टरमीडिएट की परीक्षा 15 कार्य दिवसों में होकर 12 मई को सम्पन्न होंगी। गत वर्ष में भी हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा 12 कार्य दिवसों में तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा 15 कार्य दिवसों में हुई थी। श्री शुक्ल ने बताया कि हाईस्कूल परीक्षा में 16,74,022 बालक तथा 13,20,290 बालिकाओं सहित कुल 29,94,312 परीक्षार्थी एवं इण्टरमीडिएट परीक्षा में 14,73,771 बालक तथा 11,35,730 बालिकाओं समेत कुल 26,09,501 परीक्षार्थी पंजीकृत किए गए हैं। दोनों परीक्षाओं में 31,47,793 बालक तथा 24,56,020 बालिकाएं कुल 56,03,813 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। वर्ष 2020 की हाईस्कूल परीक्षा में 30,24,480 तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में 25,86,339 कुल 56,10,819 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए थे।

3 राजधानी
खुले स्कूल, बच्चों के चेहरों पर लौटी मुस्कान
6 अभिमत
व्यवस्था सुधारने का समय
10 स्पोर्ट्स
नोवाक जोकोविच तीसरे दौर में
11 विदेश
काबुल में बम विस्फोट

RNI NO. UPHIN/2010/36547
वर्ष 11 अंक 112
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 11 फरवरी, 2021
पृष्ठ 20 मूल्य ₹ 3
लखनऊ

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित
पायनियर
www.dailypioneer.com

आज मैं जैसी भी हूं, गुरुकृपा से ही हूं
विविध-12

शिक्षा व्यवस्था का समग्रता से विचार करती है राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः डॉ. अतुल

● ट्रिपल आईटी में नई शिक्षा नीति के पहलुओं एवं क्रियान्वयन पर हुई संगोष्ठी

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज

नयी शिक्षा नीति के अनुसार प्रत्येक जिले में बड़े आकार का एक बहुविकल्पीय संस्थान वर्ष 2030 तक स्थापित किया जायेगा। विषयों के रचनात्मक संयोजन के साथ अत्याधुनिक पाठ्यक्रम, लचीले विकल्प और अनेक प्रवेश और निकास विकल्प छात्रों को अपनी रुचि के क्षेत्रों में शोध की अनुमति देंगे साथ ही जिज्ञासा को भी बढ़ावा देंगे। यह बातें डा. अतुल कोठारी सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली ने भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में नई शिक्षा नीति के विविध पहलुओं एवं उनके क्रियान्वयन के बारे में आयोजित संगोष्ठी में कहीं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश में शिक्षा व्यवस्था का समग्रता से विचार करती है। एक शिक्षा व्यवस्था जिसमें छात्र अपनी पसंद के विषय में शिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। कहा, विद्यार्थियों से शुल्क क्रेडिट पर आधारित होना चाहिए। विद्यार्थी जितने क्रेडिट के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेगा, वह संस्थान उतने ही क्रेडिट का शुल्क विद्यार्थी से लेने की व्यवस्था होनी चाहिए। विद्यार्थियों को प्रवेश पाठ्यक्रम में दिया जाना चाहिए न की पूर्ण कार्यक्रम में। उन्होंने कहा कि बहुविकल्पीय शिक्षा व्यवस्था के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक होगा कि सभी तकनीकी शिक्षण संस्थानों का वार्षिक कैलेंडर एक समान बने। जिससे छात्रों को क्रेडिट ट्रांसफर तथा प्रवेश एवं निकास के अनेक अवसर जैसे प्रावधानों को सरलता से क्रियान्वयित किया जा सके। प्रो. पी नागभूषण निदेशक ट्रिपलआईटी ने नई शिक्षा नीति को भारत के सकारात्मक बदलाव को बताया। उन्होंने कहा कि ट्रिपलआटी में नई शिक्षा नीति के लागू होने से पहले ही इसके कई प्रावधानों को पहले से ही सफलतापूर्वक लागू कर दिया गया है। अब छात्रों को परम्परागत परीक्षा प्रणाली की बजाए सीखने पर बल दिया जा रहा है। जिससे छात्रों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास हो सके। कार्यक्रम समन्वयक डा. नीतेश पुरोहित ने कहा कि ट्रिपलआईटी द्वारा विकसित पाठ्यक्रम को देश के अन्य संस्थानों में वैसे ही लागू किया जा सकता है। डा. संजय देशमुख पूर्व कुलपति मुम्बई विश्विद्यालय ने कहा कि देश कि 55 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के लोगों की है। जो देश को शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया की सर्वोच्चता दिला सकती है। इस अवसर पर डा. विजयश्री तिवारी, कुलसचिव प्रो शेखर वर्मा, प्रो. टी लहरी, प्रो. ओ पी व्यास, मनीष कुमार, प्रीतीश भारद्वाज, माधवेन्द्र मिश्र, सुनील यादव, विनीत त्रिपाठी, विजेंद्र सिंह, संजय सिंह, आशुतोष सिंह आदि मौजूद रहे।

स्वयं के आचरण से लोगों को सिखाते थे पंडित दीनदयालः डॉ. कोठारी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान पीठ की ओर से बुधवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर श्रद्धासुमन दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डा. अतुल कोठारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण तथा कार्य करने की शैली बहुत ही उत्कृष्ट थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने आचरण से लोगों को सिखाते थे। डा. कोठारी ने कहा कि जैसा उनका नाम था, वैसे ही उनके गुण थे। दीन, हीन, शोषित, पीड़ित व्यक्तियों के लिए वह मसीहा थे। नियम और कानून का जीवन में पूर्ण रुप से पालन करते थे। डा. कोठारी ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर स्थापित पीठ की सराहना की। कहा कि यह पीठ अच्छे कार्य करने का माध्यम बनेगी। श्री कोठारी ने मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की मुक्त कंठ से सराहना की। कहा कि उनके नेतृत्व में मुक्त विश्वविद्यालय ने चुनौती को अवसर में बदल दिया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने कोरोना काल में दो दिन का वेतन देकर सराहनीय कार्य किया है। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय टापू बन कर न रहे। जन सामान्य की हमसे जो अपेक्षाएं हैं। उस पर खरा उतरने का प्रयास करें। मुख्य अतिथि अतुल कोठारी तथा कुलपति प्रो के एन सिंह ने दीनदयाल उपाध्याय पुस्तिका का विमोचन किया। विषय प्रवर्तन कार्यक्रम संयोजक प्रो. गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया। आयोजन सचिव डा. संजय कुमार सिंह ने अतिथि परिचय तथा संचालन सह सचिव डा. सुरेंद्र कुमार ने किया।

न्यूज डायरी

मुक्त विश्वविद्यालय की परीक्षाएं नौ से

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के दिसंबर सत्र की परीक्षाएं नौ फरवरी से प्रदेश के 111 केंद्रों में आयोजित की जाएंगी। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस पर अंतिम मुहर भी लग गई है। परीक्षा ऑफलाइन मोड में होगी और शुक्रवार को परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र भी जारी कर दिए जाएंगे। अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से अपने प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकेंगे। प्रदेश भर से लगभग 37 हजार परीक्षार्थी इसमें शामिल होंगे। परीक्षा दो पालियों सुबह नौ से दोपहर 12 और अपराह्न एक से शाम पांच बजे तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा के लिए प्रयागराज में सर्वाधिक 21 केंद्र बनाए गए हैं। साथ ही कैदियों के लिए नैनी सेंट्रल जेल को भी परीक्षा केंद्र बनाया गया है। ब्यूरो

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

12 फरवरी, 2021

विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की परीक्षायें प्रारम्भ

मा0 कुलपति जी ने किया परीक्षा केन्द्र का औचक निरीक्षण

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की सत्र दिसम्बर–2020 एवं जून– 2020 की सेमेस्टर परीक्षायें दिनांक 09 फरवरी, 2021 से प्रदेश के 111 परीक्षा केन्द्रों में शान्तिपूर्ण ढंग से प्रारम्भ हुई। लगभग 40 हजार परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में परीक्षा दे रहे हैं। अभी तक कोई भी परीक्षार्थी अनुचित साधन का प्रयोग करते हुये नहीं पकड़ा गया। परीक्षायें दो पालियों में प्रातः 9 से 12 तथा अपराह्न 1 से 4 बजे तक पूर्ण पारदर्शिता एवं शुचितपूर्ण ढंग से आयोजित की जा रही है। सभी परीक्षा केन्द्रों पर पर्याप्त मात्रा में जल एवं प्रकाश की व्यवस्था की गयी है एवं कोविड–19 के नियमों का पूर्ण रूप से पालन किया जा रहा है। परीक्षा के लिए प्रयागराज में सर्वाधिक 21 केन्द्र बनाये गये हैं।साथ ही कैदियों के लिए नैनी सेन्ट्रल जेल में भी परीक्षा केन्द्र बनाये गये है।

कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने दिनांक 12 फरवरी, 2021 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण किया। कुलपति प्रो0 सिंह ने विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने सी0यू0जी0 मोबाइल से परीक्षार्थियों की समस्याओं के निस्तारण में सहयोग प्रदान करें। परीक्षा नियंत्रक श्री डी0पी0 सिंह ने बताया कि मेरठ, गाजियाबाद, आगरा, कानपुर, लखनऊ, बरेली, गोरखपुर, अयोध्या झांसी एवं प्रयागराज क्षेत्रीय केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले अन्य परीक्षा केन्द्रों पर सभी जगह शान्तिपूर्ण ढंग से परीक्षायें प्रारम्भ हुई। केन्द्राध्यक्षों की निगरानी में पर्यवेक्षकों एवं उड़ाकादलों ने विभिन्न परीक्षा केन्द्रों का दौरा किया। परीक्षायें 25 मार्च, 2021 को समाप्त होंगी।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

13 फरवरी, 2021

मा0 कुलपति जी ने किया परीक्षा केन्द्र का औचक निरीक्षण

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की सत्र दिसम्बर–2020 एवं जून– 2020 की सेमेस्टर परीक्षायें दिनांक 09 फरवरी, 2021 से प्रदेश के 111 परीक्षा केन्द्रों में शान्तिपूर्ण ढंग से प्रारम्भ हुई। लगभग 40 हजार परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में परीक्षा दे रहे हैं। अभी तक कोई भी परीक्षार्थी अनुचित साधन का प्रयोग करते हुये नहीं पकड़ा गया। परीक्षायें दो पालियों में प्रातः 9 से 12 तथा अपराह्न 1 से 4 बजे तक पूर्ण पारदर्शिता एवं शुचितपूर्ण ढंग से आयोजित की जा रही है।

कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने दिनांक 13 फरवरी, 2021 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण किया। कुलपति प्रो0 सिंह ने विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने सी0यू0जी0 मोबाइल से परीक्षार्थियों की समस्याओं के निस्तारण में सहयोग प्रदान करें। परीक्षा नियंत्रक श्री डी0पी0 सिंह ने बताया कि मेरठ, गाजियाबाद, आगरा, कानपुर, लखनऊ, बरेली, गोरखपुर, अयोध्या झांसी एवं प्रयागराज क्षेत्रीय केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले अन्य परीक्षा केन्द्रों पर सभी जगह शान्तिपूर्ण ढंग से परीक्षायें प्रारम्भ हुई। केन्द्राध्यक्षों की निगरानी में पर्यवेक्षकों एवं उड़ाकादलों ने विभिन्न परीक्षा केन्द्रों का दौरा किया। परीक्षायें 25 मार्च, 2021 को समाप्त होंगी।

विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

14 फरवरी, 2021

कुलपति ने किया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बॉसडीह में स्वामी विवेकानन्द के शैलचित्र का अनावरण

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बॉसडीह, जनपद– बलिया में नवस्थापित स्वामी विवेकानन्द के शैलचित्र के अनावरण के अवसर पर उपस्थित मा0 अतिथि, महाविद्यालय परिवार के सदस्य एवं शिक्षकगण।

दिनांक 15 फरवरी, 2021 को स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बॉसडीह, जनपद– बलिया में नवस्थापित स्वामी विवेकानन्द के शैलचित्र के अनावरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नवस्थापित स्वामी विवेकानन्द के शैलचित्र का अनावरण जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया की मा0 कुलपति प्रो0 कल्पलता पाण्डेय के कर कमलों द्वारा एवं ए0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह के गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार के सदस्यगण, शिक्षक, छात्र–छात्रायें एवं गममान्य नागरिक उपस्थित रहें।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

14 फरवरी, 2021

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जन सुनवाई समाधान प्रणाली की बैठक

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जन सुनवाई समाधान प्रणाली (आई0जी0आर0एस0) पर समय सीमा के उपरान्त लम्बित (डिफाल्टर सन्दर्भो) के निस्तारण एवं मा0 उच्च न्यायालय में लम्बित वादों में शतप्रतिशत–पत्र दाखिल किये जाने के सम्बन्ध में समस्त राज्य विश्वविद्यालयों के कुलसचिवों की दिनांक 15 फरवरी, 2021 को पूर्वाह्न 11:30 बजे जूम एप पर वर्चुअल बैठक आयोजित की गयी। उक्त बैठक में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता नें (जूम एप पर वर्चुअल बैठक) प्रतिभाग किया।

कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता

जूम एप पर वर्चुअल बैठक में प्रतिभाग करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

18 फरवरी, 2021

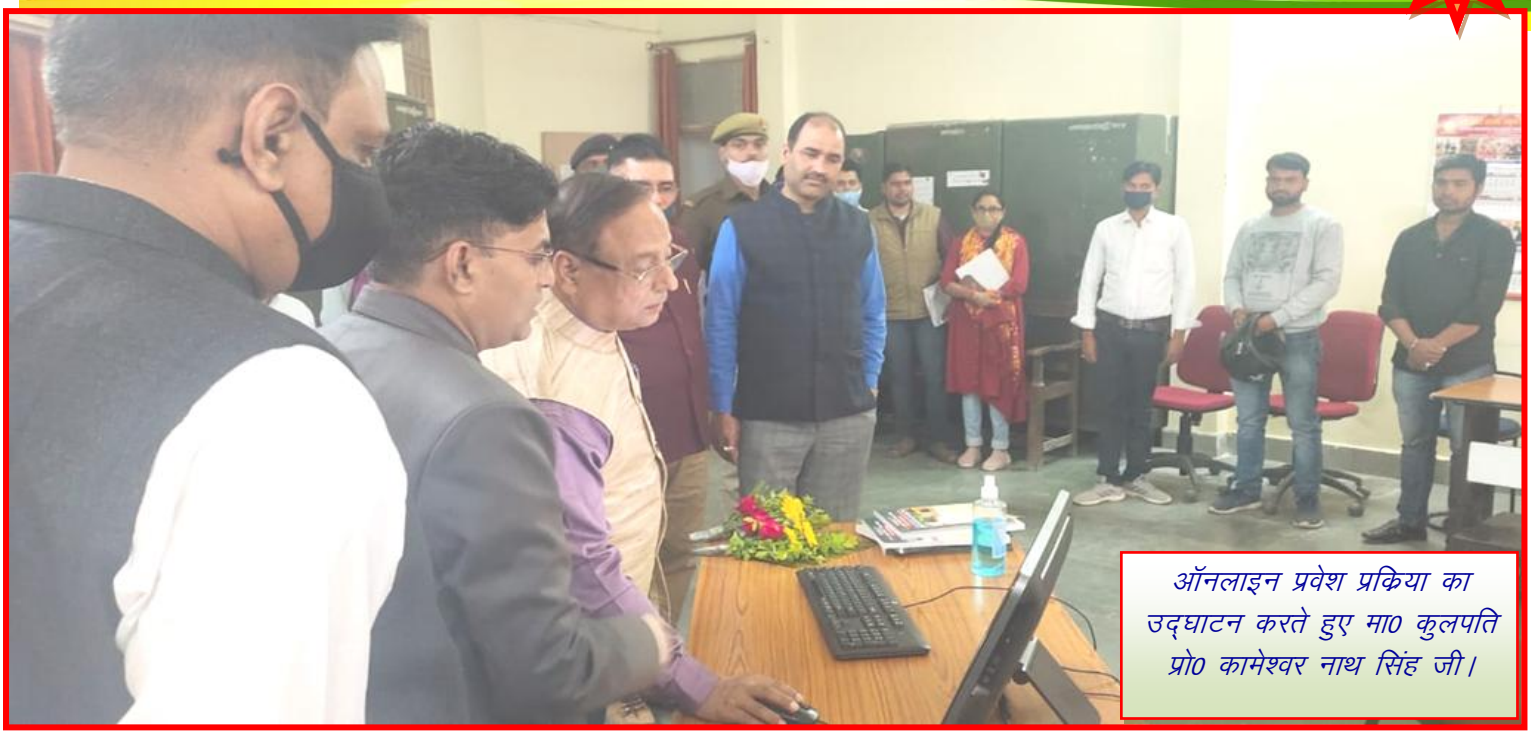

ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया का उद्घाटन करते हुए मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी।

मुक्त विश्वविद्यालय में ऑनलाइन प्रवेश प्रारम्भ

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में सत्र जनवरी 2020–21 की स्नातक एवं स्नातकोत्तर को छोडकर समस्त पी0जी0 डिप्लोमा, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र एवं जागरूकता कार्यक्रमों में ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया गुरूवार से प्रारम्भ हो गयी। मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने प्रवेश प्रक्रिया का उद्घाटन करते हुए कहा कि नवीन सत्र में प्रारम्भ हुए रोजगारपरक कार्यक्रमों से प्रदेश भर के शिक्षार्थी लाभान्वित होंगे। उन्होने कहा कि कार्यक्रमों में शिक्षार्थियों का जबर्दस्त रूझान है। आज प्रवेश कार्यालय में स्पॉट एडमीशन में विभिन्न कार्यक्रमों में छात्रों ने प्रवेश लिया। इस अवसर पर माननीय कुलपति जी द्वारा प्रवेश विवरणिका का विमोचन भी किया गया।

सत्र जनवरी 2020–21 की प्रवेश प्रक्रिया में प्रदेश में स्थित सभी 12 क्षेत्रीय केन्द्रों, प्रयागराज, लखनऊ, वाराणसी, बरेली, कानपुर, गोरखपुर, आगरा, अयोध्या, मेरठ, झांसी, आजमगढ़ तथा गाजियाबाद में प्रवेश के लिए छात्र–छात्राओं में काफी रूझान रहा। प्रवेश प्रभारी डॉ0 ज्ञान प्रकाश यादव ने प्रारम्भ में कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह का स्वागत किया। कोविड–19 के दौरान मुक्त एवं दुरस्थ शिक्षा की लोकप्रियता एवं मांग विश्वविद्यालय में अत्यधिक महसूस की गयी तथा प्रवेश में वृद्धि देखी गयी। उन्होंने इस पुनीत कार्य में सभी विद्याशाखाओं के निदेशकों से एवं विश्वविद्यालय परिवार के अन्य सदस्यों से सहयोग की अपेक्षा की।

कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि यू0जी0सी0 ने इस बार विश्वविद्यालय को कई रोजगारपरक कार्यक्रम प्रदान किए हैं, जिनका प्रचार–प्रसार छात्रों के बीच में किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। अध्ययन केन्द्र समन्वयकों की यह जिम्मेदारी है कि वे विश्वविद्यालय के लोकप्रिय कार्यक्रमों जन–जन तक फैलायें। उन्होंने आदि कार्यक्रमों को अत्यन्त उपयोगी बताया। प्रो0 सिंह ने कहा कि भविष्य में और उपयोगी कार्यक्रम प्रारम्भ किए जायेंगे।

इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह प्रो0 प्रेम प्रकाश दुबे, प्रो0 आशुतोष गुप्त, प्रो0 एस0 कुमार, डॉ0 दिनेश सिंह आदि उपस्थित रहे।

मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण।

ऑनलाइन प्रवेश का शुभारम्भ करते हुए मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी एवं विश्वविद्यालय के निदेशक व शिक्षकगण।

ऑनलाइन प्रवेश के शुभारम्भ के अवसर पर उपस्थित छात्र–छात्रायें।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

18 फरवरी, 2021

मुक्त विवि

वीसी प्रो. केएन सिंह का कार्यकाल बढ़ा

कार्यकाल बढ़ने पर
मा0 कुलपति
प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी
को
पुष्पगुच्छ भेंट कर
उनको
बधाई देते हुए
विश्वविद्यालय परिवार
के
सदस्यगण।

[redacted] उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह का कार्यकाल राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने अग्रिम आदेश तक बढ़ा दिया है। उनके पास प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार भी है।

मुक्त विश्वविद्यालय के 10वें और वर्तमान कुलपति के तौर पर प्रो. सिंह ने 21 फरवरी 2018 को पदभार ग्रहण किया था। उन्होंने अपने कार्यकाल में विवि को शिखर पर ले जाने का कार्य किया। उन्होंने विवि में तमाम नए पाठ्यक्रमों को मंजूरी देने के साथ कई ऐतिहासिक फैसले भी लिए। कैदियों और किन्नरों को मुफ्त में पढ़ाने का निर्णय भी प्रो. सिंह ने लिया। उनकी सिफारिश पर ही राजभवन ने व्यक्तिगत डिग्री पर रोक भी लगाई थी। 20 फरवरी को उनका तीन साल का कार्यकाल पूरा हो जाएगा। प्रो. संगीता श्रीवास्तव को इविवि में कुलपति बनाए जाने पर राज्य विवि का अतिरिक्त प्रभार भी प्रो. सिंह को सौंपा गया। प्रथम परिनियमावली-2002 के परिनियम-2.02 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रो. केएन सिंह के कुलपति पद के कार्यकाल को नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक अथवा अग्रिम आदेश तक बढ़ा दिया है।

लेबर सर्वे सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन लॉन्च पेज 17 | रश्मि का ऑक्सफोर्ड छात्र संघ अध्यक्ष पद से इस्तीफा पेज 20

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

www.livehindustan.com

युवा | आज का दिन 1915 में महान स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले का निधन हुआ। | हिन्दुस्तान 04 प्रयागराज • शुक्रवार • 19 फरवरी 2021

वीसी प्रो. केएन सिंह का कार्यकाल बढ़ा

मुक्त विवि

प्रयागराज | निज संवाददाता

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएन सिंह का कार्यकाल राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने अग्रिम आदेश या नए कुलपति की नियुक्ति तक बढ़ा दिया है। प्रो. सिंह ने 21 फरवरी 2018 को विश्वविद्यालय के दसवें नियमित कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण किया था। 20 फरवरी को प्रो. सिंह का कार्यकाल पूरा होगा।

प्रो. संगीता श्रीवास्तव को इविवि में कुलपति बनाए जाने पर प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय का अतिरिक्त प्रभार भी प्रो. सिंह को सौंपा गया। गुरुवार को राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने इस बारे में पत्र भेजा। इसमें कहा गया कि विवि में वर्तमान में नियमित कुलपति की नियुक्ति में कुछ समय लगने की संभावना है। ऐसे में प्रथम परिनियमावली-2002 के परिनियम-2.02 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रो. केएन सिंह के कुलपति पद के कार्यकाल को नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक अथवा अग्रिम आदेशों तक बढ़ा दिया गया है।

दैनिक जागरण

युवा जागरण 18

राज्यपाल ने बढ़ाया प्रोफेसर केएन सिंह का कार्यकाल

आदेश जारी

- 20 फरवरी को पूरा हो जाएगा कुलपति पद का कार्यकाल
- कुलपति की नियुक्ति में देरी की मद्देनजर पर लिया फैसला

जासं, प्रयागराज : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन के कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह का कार्यकाल राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने अग्रिम आदेश तक बढ़ा दिया है। उनके पास प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार भी है।

मुक्त विश्वविद्यालय के 10वें और वर्तमान कुलपति के तौर पर प्रो. सिंह ने 21 फरवरी 2018 को पदभार ग्रहण किया था। उन्होंने अपने कार्यकाल में विवि को शिखर पर ले जाने का कार्य किया। उन्होंने विवि में तमाम नए पाठ्यक्रमों को मंजूरी देने के साथ कई ऐतिहासिक फैसले भी लिए। कैदियों और किन्नरों को मुफ्त में पढ़ाने का निर्णय भी प्रो. सिंह ने लिया। उनकी सिफारिश पर ही राजभवन ने व्यक्तिगत डिग्री पर रोक भी लगाई थी। 20 फरवरी को उनका तीन साल का कार्यकाल पूरा हो जाएगा। प्रो. संगीता श्रीवास्तव को इविवि में कुलपति बनाए जाने पर राज्य विवि का अतिरिक्त प्रभार भी प्रो. सिंह को सौंपा गया। प्रथम परिनियमावली-2002 के परिनियम-2.02 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रो. केएन सिंह के कुलपति पद के कार्यकाल को नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक अथवा अग्रिम आदेश तक बढ़ा दिया है।

अमर उजाला

प्रयागराज शुक्रवार, 19 फरवरी 2021

कोविड कार्यशाला मोदी बोले-21वीं सदी को एशिया के नाम करने के लिए दिखानी होगी एकजुटता...12 उत्तर प्रदेश

अमर उजाला प्रयागराज युवा Youth amarujala.com प्रयागराज | शुक्रवार, 19 फरवरी 2021 6

मुक्त विवि के कुलपति का कार्यकाल बढ़ा

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएन सिंह का कार्यकाल राज्यपाल ने अग्रिम आदेश तक बढ़ा दिया है। प्रो. केएन सिंह ने 21 फरवरी 2018 को मुक्त विवि के कुलपति का पदभार संभाला था। 20 फरवरी 2021 को उनका तीन वर्ष का कार्यकाल पूरा हो रहा है। नए कुलपति की नियुक्ति न होने पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने उनका कार्यकाल अग्रिम आदेश तक बढ़ाया है। प्रो. केएन सिंह के पास प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति पद का अतिरिक्त प्रभार भी है। ब्यूरो

मुक्त विवि में जनवरी सत्र की प्रवेश प्रक्रिया शुरू

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में जनवरी 2021 सत्र की प्रवेश प्रक्रिया बृहस्पतिवार से शुरू हो गई। कुलपति प्रो. केएन सिंह ने पीजी डिप्लोमा, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र और जागरूकता कार्यक्रम में ऑनलाइन प्रवेश की शुरुआत की। जनवरी सत्र में स्नातक एवं परास्नातक के द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के शिक्षार्थी भी ऑनलाइन प्रवेश ले सकते हैं। प्रवेश प्रभारी डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव के अनुसार जनवरी 2021 में स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं में प्रथम वर्ष में नए प्रवेश नहीं लिए जाएंगे। प्रवेश प्रक्रिया 20 मार्च 2021 तक संचालित की जाएगी। ब्यूरो

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

20 फरवरी, 2021

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफल क्रियान्वयन के परिप्रेक्ष्य में
शिक्षक शिक्षा के पुनरुत्थान हेतु

राष्ट्रीय कार्यशाला

शिक्षक शिक्षा का पुनरुन्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति .2020 पर कार्यशाला का आयोजन

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के शिक्षा विद्याशाखा एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा के तत्वाधान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सफल क्रियान्वयन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा के पुनरुत्थान हेतु **''शिक्षक शिक्षा का पुनरुन्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020''** विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 20 फरवरी, 2020 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित लोमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित की गयी। राष्ट्रीय कार्यशाला के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति, जयनारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार तथा सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी, अखिल भारती सह संगठन मंत्री, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा रहे। राष्ट्रीय कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

दीप प्रज्ज्वलित कर
राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ
करते हुए
माननीय अतिथिगण।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह, सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी एवं माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी दीप प्रज्ज्वलित का कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अतिथियों ने मॉ0 सरस्वती जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण किए। कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता, डॉ0 नीता मिश्रा एवं डॉ0 स्मिता अग्रवाल ने मा0 अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सह–सयोजक डॉ0 दिनेश सिंह ने किया।

मा0 अतिथियों का परिचय एवं स्वागत कार्यक्रम संयोजक एवं प्रभारी निदेशक,शिक्षा विद्याशाखा प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय ने किया तथा विषय प्रवर्तन दिग्विजय नाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर के डॉ0 राज शरण शाही ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचि डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता ने किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सह–सयोजक डॉ0 दिनेश सिंह एवं मंचासीन माननीय अतिथिगण।

सभागार में उपस्थित प्रतिभागीगण।

मा0 अतिथियों का स्वागत

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह जी को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता।

सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करती हुई डॉ0 नीता मिश्रा।

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करती हुई डॉ0 स्मिता अग्रवाल।

सभागार में उपस्थित प्रतिभागीगण।

अतिथि परिचय एवं स्वागत

मा0 अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए कार्यक्रम संयोजक प्रो0 पी.के. पाण्डेय

कार्यक्रम संयोजक प्रो0 पी.के. पाण्डेय ने मा0 अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए नई शिक्षा नीति–2020 के क्रियान्वयन के लिए आह्वान किया, और कहा कि शिक्षा ही प्रमुख आधार है, जो इसका क्रियान्वयन करेगा।

विषय प्रवर्तन

डॉ राज शरण शाही

विषय प्रवर्तन करते हुए दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, गोरखपुर के डॉ राज शरण शाही ने कहा कि भारत में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परंपरा रही है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की 5 प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

सारस्वत अतिथि का उद्‌बोधन

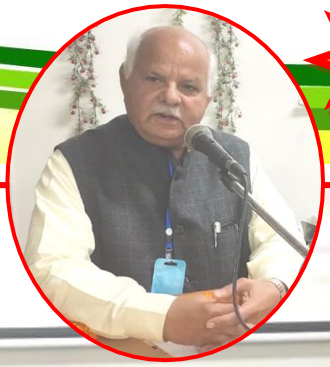

कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी

शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करें – श्री यतींद्र

सारस्वत अतिथि श्री यतींद्र, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्‌या भारती ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करें । जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते हैं लेकिन विद्‌यालय नहीं चला सकते। शिक्षक अपनी साधना के बल पर पेड़ के नीचे भी शिक्षण कार्य करते हुए राष्ट्र निर्माण कर सकता है। संसाधनों के अभाव में भी संपूर्ण राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमें अच्छे शिक्षक का निर्माण करना होगा,पाठ्‌यक्रम निर्माण करना होगा। जिससे हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। इसी संकल्पना के साथ विद्‌या भारती कार्य कर रही है।

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता का उद्बोधन

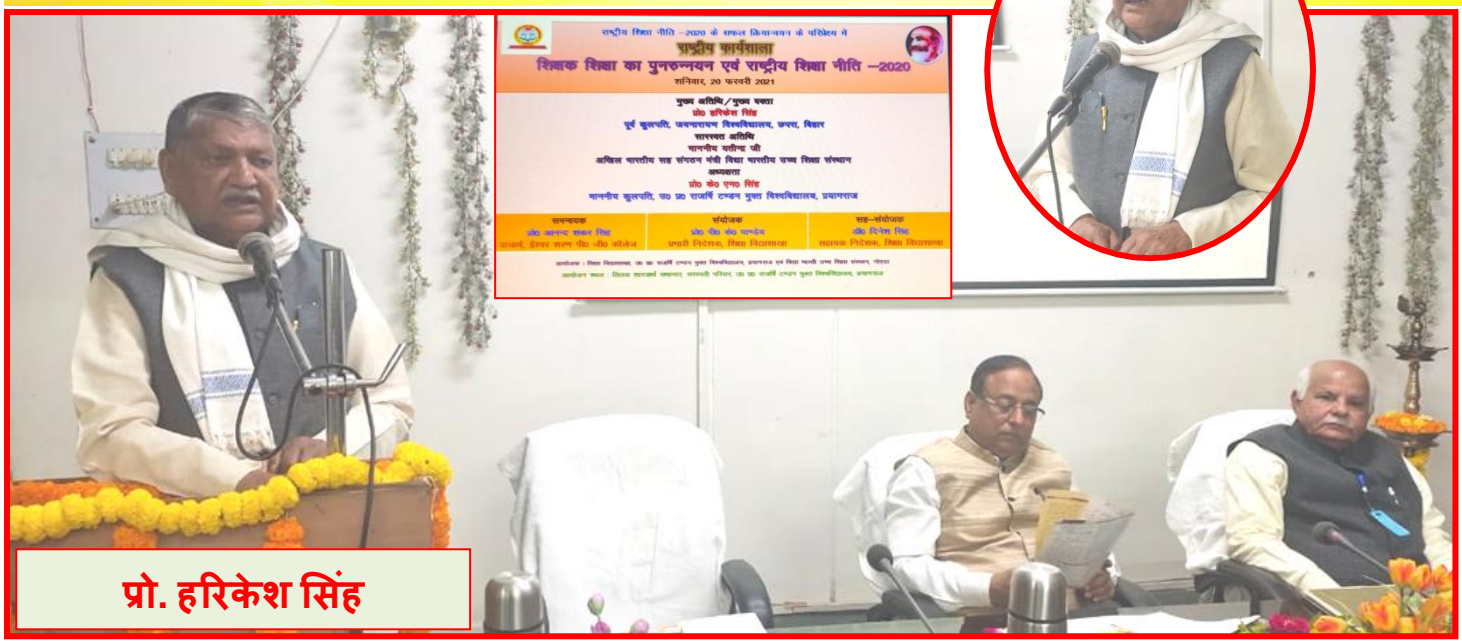

प्रो. हरिकेश सिंह

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी- प्रो हरिकेश सिंह

कार्यशाला के मुख्य अतिथि जय नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था। एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है। युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण है। आज कोई राष्ट्र ऐसा नहीं है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए।

प्रोफेसर सिंह ने बड़ी गंभीरता से कहा कि अगर शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी।

उन्होंने शिक्षक शिक्षा के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम के विषय में कहा कि सन 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विद्यमान है।

उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उन्नयन किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान है।

अतिथि सम्मान

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह एवं सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी को अंगवस्त्र, श्रीफल तथा सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ की पुस्तक भेंट कर उनका सम्मान करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी साथ में कार्यक्रम संयोजक प्रो0 पी.के. पाण्डेय एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 आनन्द शंकर सिंह

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को अंगवस्त्र, श्रीफल तथा सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ की पुस्तक भेंट कर उनका सम्मान करते हुए सारस्वत अतिथि माननीय यतीन्द्र जी, कार्यक्रम संयोजक प्रो0 पी.के. पाण्डेय एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 आनन्द शंकर सिंह

कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह

शिक्षा एक्शन ओरिएंटेड होनी चाहिए : प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नहीं होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एक्शन ओरिएंटेड होनी चाहिए। आज इसका विलोपन हो रहा है। आज के युवा श्रम से भाग रहे हैं। उन्हें श्रम से भागना नहीं है। उनका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता

सभागार में उपस्थित प्रतिभागीगण।

राष्ट्रगान करते हुए मा0 अतिथि एवं विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण

प्रथम तकनीकि सत्र

प्रथम तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता प्रो0 एस.पी. गुप्ता, पूर्व निदेशक शिक्षा विद्याशखा, यूपीआरटीओयू, ने नई शिक्षा नीति–2020 के मुख्य बिन्दुओं एवं सुझावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस तकनीकी सत्र में **ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आनंद शंकर सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी के साहू, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी, प्रोफेसर रुचि बाजपेई, प्रोफेसर विनोद कुमार गुप्त, डॉ शैलेश** कुमार पाण्डेय**आदि उपस्थित रहे।**

मुख्य वक्ता प्रो0 एस.पी. गुप्ता, पूर्व निदेशक शिक्षा विद्याशखा, यूपीआरटीओयू, को अंगवस्त्र एवं पुस्तक भेंट कर उनका सम्मान करते हुए आयोजन समिति के सदस्यगण।

द्वितीय तकनीकि सत्र

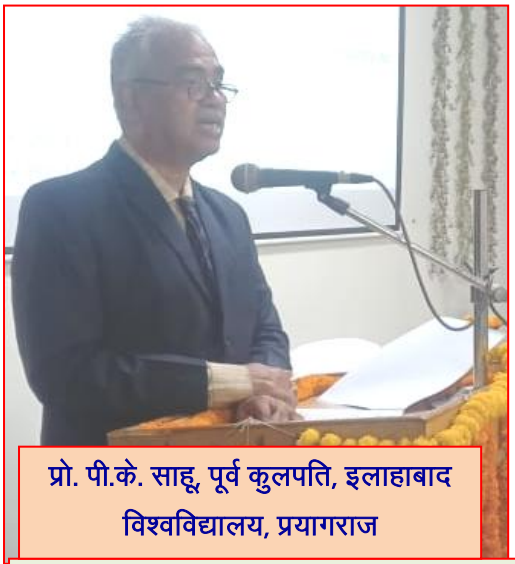

प्रो. पी.के. साहू, पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. पी.के. साहू जी का स्वागत एवं परिचय देते हुए कार्यकम संयोजक प्रो0 पी.के. पाण्डेय

द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. पी.के. साहू जी थे। उन्होंने तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता एवं महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तकनीकी शिक्षा एवं कोविड काल के दौर में आज औपचारिक शिक्षण संस्थान ऑन लाइन अध्यापन एवं परीक्षा करा रहें हैं, जबकि मुक्त विश्विद्यालय जो ऑन लाइन एवं दूरस्थ माध्यम के केन्द्र बिन्दु हैं आफ लाइन परीक्षा करा रहें हैं जैसे कि राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय अधिगमकर्ताओं से फेस टु फेस परामर्श सत्र का संचालन भी कर रहें है।

समूह परिचर्चा

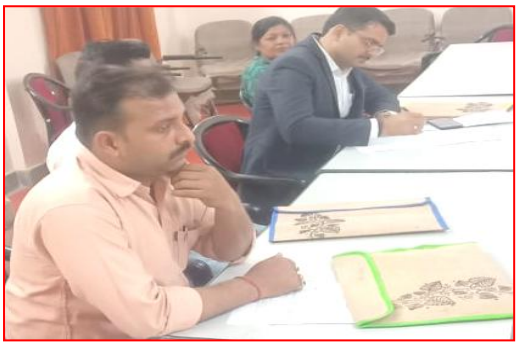

समूह परिचर्चा करते हुए
प्रतिभागीगण।

समूह परिचर्चा के सुझावों को सम्प्रेषित करते हुए श्री परविन्द कुमार वर्मा एवं एम.डी. पी.जी. कालेज, प्रतापगढ के शिक्षक शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 शैलेश कुमार पाण्डेय

समापन सत्र

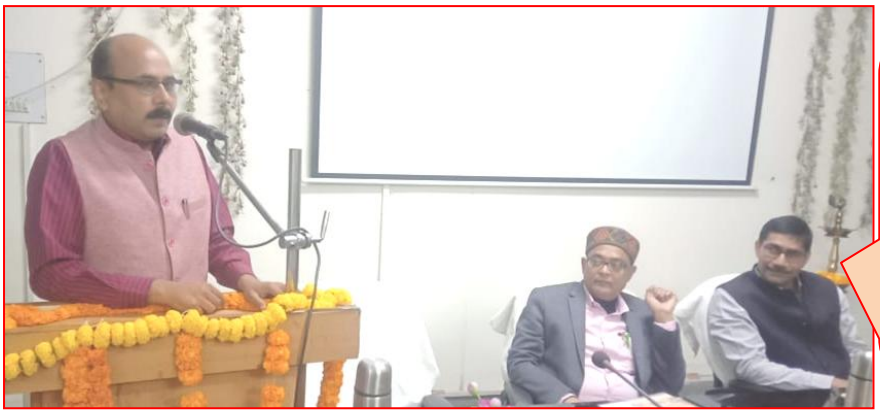

समापन सत्र के

मुख्य अतिथि डॉ0 राज शरण शाही

एवं अध्यक्षता कर रहे

प्रो0 पी0के0 पाण्डेय

तथा संचालनकर्ता डॉ0 दिनेश सिंह

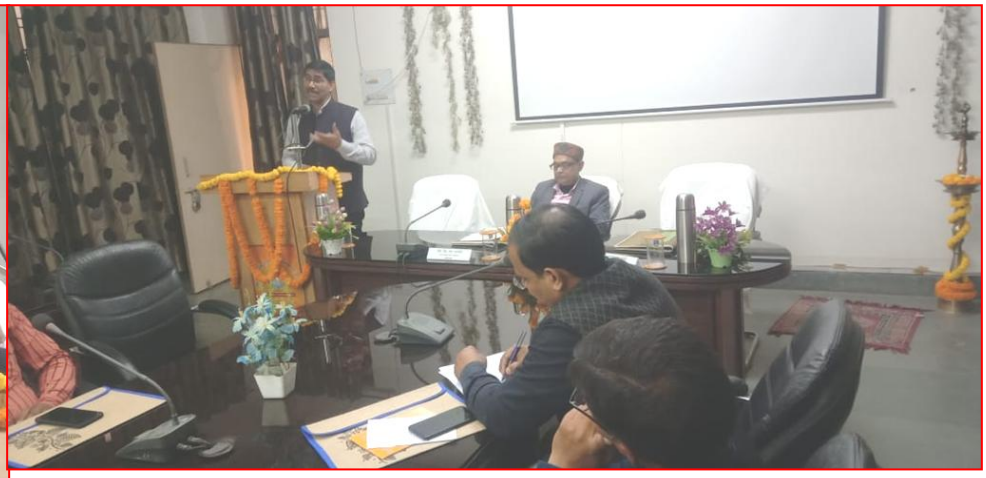

समापन सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि डॉ0 राज शरण शाही

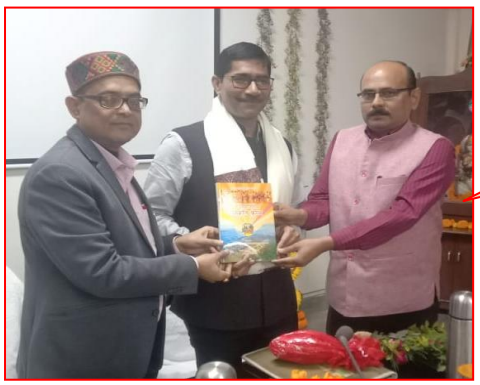

मुख्य अतिथि डॉ0 राज शरण शाही जी का सम्मान करते हुए आयोजन समिति के सदस्यगण।

कार्यक्रम संयोजक प्रो.पी.के. पाण्डेय जी का सम्मान करते हुए आयोजन समिति के सदस्यगण।

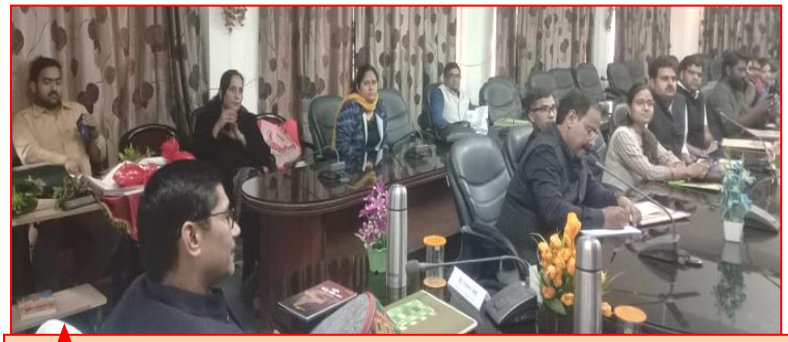

समापन सत्र में अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ0 सुरेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य शिक्षा विद्याशाखा।

प्रयागराज, रविवार
21 फरवरी, 2021
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 6.00
पृष्ठ 20+4=24

दैनिक जागरण

www.jagran.com

आधुनिक मदरसो में तैयार होगा देश का भविष्य 15
निवेश बढ़ाए उद्योग जगत: सीतारमण 13

युवा जागरण

30 लाख से अधिक अभ्यर्थियों के पीईटी परीक्षा में शामिल होने का अनुमान

शिक्षा के उन्नयन को पुरातात्विक सर्जरी जरूरी : प्रो . हरिकेश

जासं, प्रयागराज : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को 'शिक्षक शिक्षा का पुनरुन्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला हुई। मुख्य अतिथि बिहार के छपरा स्थित जय नारायण विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था। यदि शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल (पुरातात्विक) सर्जरी करनी होगी।

उन्होंने कहा शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन में

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि में कार्यशाला में शामिल शिक्षाविद् ● साभार : पीआरओ

कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है।

विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री यतींद्र ने कहा, जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करेगा तो राष्ट्र का निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते हैं लेकिन विद्यालय नहीं चला सकते।

गोरखपुर के दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज के डा. राज शरण शाही, ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डा. आनंद शंकर सिंह, इविवि के पूर्व कार्यवाहक कुलपति प्रो. पीके साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रो. एसपी गुप्त, प्रो. सत्यपाल तिवारी, प्रो. सुधांशु त्रिपाठी, प्रो. रुचि बाजपेई, प्रो. विनोद कुमार गुप्त, डा. शैलेश पांडेय आदि ने भी विचार रखे। स्वागत प्रो. पीके पांडेय, संचालन डा. दिनेश सिंह और धन्यवाद डा. अरुण कुमार गुप्त ने ज्ञापित किया।

आनंदी मेल

(हिन्दी दैनिक) लखनऊ, रविवार, 21 फरवरी 2021 R.N.I No.UPHIN/2009/29300 पृष्ठ: 8

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी : प्रो हरिकेश

आनंदी मेंल संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में शिक्षक शिक्षा का पुनरूत्रयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि जय नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था।एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है। युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण है। आज कोई राष्ट्र ऐसा नहीं है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त

बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए। प्रोफेसर सिंह ने बड़ी गंभीरता से कहा कि अगर शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी। उन्होंने शिक्षक शिक्षा के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम के विषय में कहा कि सन 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विद्यमान है।उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उन्नयन किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नहीं होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एक्शन ओरिएंटेड होनी चाहिए। आज इसका विलोपन हो रहा है। आज के युवा श्रम से भाग रहे हैं। उन्हें श्रम से भागना नहीं है। उनका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए। सारस्वत अतिथि यतींद्र, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती ने कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते हैं लेकिन विद्यालय नहीं चला सकते। शिक्षक अपनी साधना के बल पर पेड़ के नीचे भी शिक्षण कार्य करते हुए राष्ट्र निर्माण कर सकता है।

संसाधनों के अभाव में भी संपूर्ण राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमें अच्छे शिक्षक का निर्माण करना होगा,पाठ्यक्रम निर्माण करना होगा। जिससे हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। इसी संकल्पना के साथ विद्या भारती कार्य कर रही है। इससे पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, गोरखपुर के डॉ राज शरण शाही ने कहा कि भारत में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परंपरा रही है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की 5 प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। अतिथियों का स्वागत कार्यशाला के संयोजक प्रोफेसर पी के पांडे ने किया। संचालन सह संयोजक डॉ दिनेश सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया। अन्य तकनीकी सत्रों में विभिन्न विद्वानों ने समूह चर्चा की। जिसमें कार्यशाला के समन्वयक एवं ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आनंद शंकर सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी के साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रोफेसर एसपी गुप्ता, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी, प्रोफेसर रुचि बाजपेई, प्रोफेसर विनोद कुमार गुप्ता, डॉ शैलेश पांडे आदि उपस्थित रहे।

समय से पहले 'समय' पर नजर

नगर संस्करण

न्यायाधीश

डाक रजिस्ट्रेशन नं.- ए.डी.34/2021-23

प्रयागराज, 21 फरवरी 2021

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी- प्रो हरिकेश सिंह

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में शिक्षक शिक्षा का पुनरूनन्यन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि जय नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नही होना चाहिए था। एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है। युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण हैं। आज कोई राष्ट्र ऐसा नही है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए।प्रोफेसर सिंह ने बड़ी गंभीरता से कहा कि अगर शिक्षक शिक्षा का उनन्यन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी।

उन्होंने शिक्षक शिक्षा के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम के विषय में कहा कि सन 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सवीपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विदयमान है।

उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उनन्यन किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान है।।अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नही होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एक्शन

ओरिएंटेड होनी चाहिए। आज निर्माण कर सकता है। इसका विलोपन हो रहा है। आज संसाधनों के अभाव में भी संपूर्ण के युवा श्रम से भाग रहे हैं। राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर उन्हें श्रम से भागना नहीं है। सकता है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य निर्धारित होना आज हमें अच्छे शिक्षक का चाहिए।सारस्वत अतिथि श्री निर्माण करना होगा,पाठ्यक्रम यतीद्र, अखिल भारतीय सह निर्माण करना होगा। जिससे संगठन मंत्री, विदया भारती ने हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र इसी संकल्पना के साथ विदया निर्माण का संकल्प लेकर कार्य भारती कार्य कर रही है।इससे करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए होता है। प्रबंध में लगे लोग दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, भौतिक संसाधन जुटा सकते गोरखपुर के डॉ राज शरण है लेकिन विदयालय नहीं चला शाही ने कहा कि भारत में सकते। शिक्षक अपनी साधना शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परंपरा रही के बल पर पेड़ के नीचे भी है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का शिक्षण कार्य करते हुए राष्ट्र विशेष महत्व है।

शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की 5 प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

अतिथियों का स्वागत कार्यशाला के संयोजक प्रोफेसर पी के पांडे ने किया। संचालन सह संयोजक डॉ दिनेश सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया। अन्य तकनीकी सत्रों में विभिन्न विद्वानों ने समूह चर्चा की। जिसमें कार्यशाला के समन्वयक एवं ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आनंद शंकर सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी के साहू, शिक्षा विदया शाखा के पूर्व निदेशक प्रोफेसर एसपी गुप्ता, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी, प्रोफेसर रुचि बाजपेई, प्रोफेसर विनोद कुमार गुप्त, डॉ शैलेश पांडे आदि

हिन्दी दैनिक

माघ मेला

इलाहाबाद एक्सप्रेस

वर्ष : 11 अंक : 320, प्रयागराज, रविवार 21 फरवरी 2021, पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी : प्रो हरिकेश

हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा: कुलपति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर कार्यशाला का आयोजन

शिक्षक अपनी साधना के बल पर राष्ट्र निर्माण कर सकता है : यतीन्द्र

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज। शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था। अगर शिक्षक को शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी। एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है।

उक्त विचार जयनारायण विश्वविद्यालय छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को मुक्त विवि में शिक्षक शिक्षा का पुनरून्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण हैं। आज कोई राष्ट्र ऐसा नहीं है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए।

उन्होंने शिक्षक शिक्षा के चार वर्षीय पाठ्यक्रम पर कहा कि सन् 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उन्नयन किया था और पं.दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र निर्माण में बड़ा योगदान है।

अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती यतींद्र ने कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते हैं, लेकिन विद्यालय नहीं चला सकते। शिक्षक अपनी साधना के बल पर पेड़ के नीचे भी शिक्षण

कार्य करते हुए राष्ट्र निर्माण कर सकता है। संसाधनों के अभाव में भी सम्पूर्ण राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमें अच्छे शिक्षक एवं पाठ्यक्रम का निर्माण करना होगा। जिससे हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। इसी संकल्पना के साथ विद्या भारती कार्य कर रही है।

कुलपति प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति ने कहा जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नहीं होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। उन्होंने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। कहा कि आज के युवा श्रम से भाग रहे हैं। उन्हें श्रम से भागना नहीं है। उनका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए।

विषय प्रवर्तन करते हुए दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, गोरखपुर के डॉ.राज शरण शाही ने कहा कि भारत में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परम्परा रही है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की पांच प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। अतिथियों का स्वागत कार्यशाला के संयोजक प्रो. पी.के पांडेय तथा संचालन सह संयोजक डॉ.दिनेश सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. अरुण कुमार गुप्ता ने किया। कार्यशाला के समन्वयक एवं ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आनंद शंकर सिंह, इविवि के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी.के साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रो. एसपी गुप्ता, प्रो.सत्यपाल तिवारी, प्रो. सुधांशु त्रिपाठी, प्रो.रुचि बाजपेई, प्रो.विनोद कुमार गुप्त, डॉ.शैलेश पांडेय आदि उपस्थित रहे।

दैनिक कर्मठ

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित

वर्ष : 05 अंक : 52 प्रयागराज, रविवार , 21 फरवरी 2021 विक्रम संवत 2076 प्रातः संस्करण ईमेल -dainikkarmath@gmail.com पृष्ठ : 08 मूल्य : 1/ रुपया

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी- प्रो हरिकेश सिंह

राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 पर कार्यशाला का आयोजन

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में शिक्षक शिक्षा का पुनरून्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि जय नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नही होना चाहिए था। एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है। युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण है। आज कोई राष्ट्र ऐसा नही है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए। प्रोफेसर सिंह ने बड़ी गंभीरता से कहा कि अगर शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी। उन्होंने शिक्षक शिक्षा के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम के विषय में कहा कि सन 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उन्नयन किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान है।

अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नहीं होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एक्शन ओरिएंटेड होनी चाहिए। आज इसका विलोपन हो रहा है। आज के युवा श्रम से भाग रहे हैं। उन्हें श्रम से भागना नहीं है। उनका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए। सारस्वत अतिथि श्री यतींद्र, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती ने कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते हैं लेकिन विद्यालय नहीं चला सकते। शिक्षक अपनी साधना के बल पर पेड़ के नीचे भी शिक्षण कार्य करते हुए राष्ट्र निर्माण कर सकता है। संसाधनों के अभाव में भी संपूर्ण राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमें अच्छे शिक्षक का निर्माण करना होगा,पाठ्यक्रम निर्माण करना होगा। जिससे हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। इसी संकल्पना के साथ विद्या भारती कार्य कर रही है।

इससे पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, गोरखपुर के डॉ राज शरण शाही ने कहा कि भारत में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परंपरा रही है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की 5 प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। अतिथियों का स्वागत कार्यशाला के संयोजक प्रोफेसर पी के पांडे ने किया। संचालन सह संयोजक डॉ दिनेश सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया।

अन्य तकनीकी सत्रों में विभिन्न विद्वानों ने समूह चर्चा की। जिसमें कार्यशाला के समन्वयक एवं ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आनंद शंकर सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी के साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रोफेसर एसपी गुप्ता, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी, प्रोफेसर रुचि बाजपेई, प्रोफेसर विनोद कुमार गुप्त, डॉ शैलेश पांडे आदि उपस्थित रहे।

दैनिक लोकमित्र

सच्चाई की जंग

वर्ष : 27 | अंक : 111
प्रतापगढ़ |रविवार , 21 फरवरी-2021
पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रुपये

प्रतापगढ़,लखनऊ, कौशाम्बी, एवं प्रयागराज से एक साथ प्रकाशित

संस्थापक : श्रद्धेय स्व. रामनिरंजन मगवन प्रतिदिन की खबरों के लिए देखें www.dailylokmitra.com R.N.I. No.: 71870/94

शिक्षा के उन्नयन के लिए ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी जरूरी- प्रो हरिकेश सिंह

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 पर कार्यशाला का आयोजन

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में शिक्षक शिक्षा का पुनरुन्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।इस अवसर पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि जय नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रोफेसर हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था। एक व्यक्ति की शुचिता विश्व को बचा सकती है। युधिष्ठिर, दधीचि और विभीषण आदि इसके उदाहरण है। आज कोई राष्ट्र ऐसा नहीं है जो सुकून से सो रहा है। लॉकडाउन की अवधि में दुनिया की मानवता का लक डाउन हो गया। लोगों का चित्त छोटा हुआ है। चित्त बड़ा करने के लिए सुकून से सोना और सुकून से साधना करनी चाहिए।प्रोफेसर सिंह ने बड़ी गंभीरता से कहा कि अगर शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल सर्जरी करनी होगी।उन्होंने शिक्षक शिक्षा के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम के विषय में कहा कि सन 2030 के बजाय अभी से क्रियान्वयन होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का तात्पर्य शिशु से लेकर शोध तक दृष्टि देने वाले सभी शिक्षक एक ही जगह तैयार होने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक वही है जो अपने परिवार के अलावा किसी बच्चे को देखें तो उसमें अपने भाई, बहन, बेटे, बेटी का भाव जागृत हो। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। राष्ट्र शब्द शरीर के प्रत्येक कण में विद्यमान है।उन्होंने कहा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने शिक्षा का उन्नयन किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षक छात्र से जुड़ते थे, उसके परिवार से जुड़ते थे तथा गांव से जुड़ते थे। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। जिस पर चिंतन करना जरूरी है। हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से बाहर निकलना होगा। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि जब तक शिक्षक के अंदर शिक्षक की आत्मा नहीं होगी वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन दुनिया में सबसे अधिक हैं। ऊर्जा के स्रोत भारत में सबसे अधिक हैं। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मानव संसाधन मस्तिष्क का स्रोत है। उसको यदि प्रशिक्षित किया जाए तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एक्शन ओरिएंटेड होनी चाहिए। आज इसका विलोपन हो रहा है। आज के युवा श्रम से भाग रहे हैं। उन्हें श्रम से भागना नहीं है। उनका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए। सारस्वत अतिथि यतींद्र, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती ने कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। प्रबंध में लगे लोग भौतिक संसाधन जुटा सकते है लेकिन विद्यालय नहीं चला सकते। शिक्षक अपनी साधना के बल पर पेड़ के नीचे भी शिक्षण कार्य करते हुए राष्ट्र निर्माण कर सकता है। संसाधनों के अभाव में भी संपूर्ण राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमें अच्छे शिक्षक का निर्माण करना होगा,पाठ्यक्रम निर्माण करना होगा। जिससे हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो। इसी संकल्पना के साथ विद्या भारती कार्य कर रही है। इससे पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज, गोरखपुर के डॉ राज शरण शाही ने कहा कि भारत में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ परंपरा रही है। जिसमें शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षा की 5 प्रतिबद्धताएं होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों को साधक का स्थान बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।अतिथियों का स्वागत कार्यशाला के संयोजक प्रोफेसर पी के पांडे ने किया। संचालन सह संयोजक डॉ दिनेश सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने किया।अन्य तकनीकी सत्रों में विभिन्न विद्वानों ने समूह चर्चा की। जिसमें कार्यशाला के समन्वयक एवं ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आनंद शंकर सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी के साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रोफेसर एसपी गुप्ता, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी, प्रोफेसर रुचि बाजपेई, प्रोफेसर विनोद कुमार गुप्ता, डॉ शैलेश पांडे आदि उपस्थित रहे।

रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

जून में 83

अल्फिया ने एड्रियाटिक पर्ल में स्वर्ण पदक जीता पेज 14 | भारत को कार्बन उत्सर्जन में कटौती करनी होगी पेज 18

www.livehindustan.com

शिक्षा के उन्नयन के लिए पुरातात्विक सर्जरी जरूरी

प्रयागराज | निज संवाददाता

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को 'शिक्षक शिक्षा का पुनरुन्नयन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि बिहार के छपरा स्थित जय नारायण विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह ने कहा कि शिक्षा को समवर्ती सूची में नहीं होना चाहिए था। यदि शिक्षक शिक्षा का उन्नयन करना है तो ऑन्कोलॉजिकल (पुरातात्विक) सर्जरी करनी होगी। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. केएन सिंह ने कहा नई शिक्षा नीति कई समाधान लेकर आई है। यह बहुत प्रासंगिक है। विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री यतींद्र ने कहा कि जब शिक्षक राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करता है तो पूरा राष्ट्र निर्माण होता है। डॉ. राज शरण शाही, ईश्वर शरण पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ.आनंद शंकर सिंह, इविवि के पूर्व कार्यवाहक कुलपति प्रो. पीके साहू, शिक्षा विद्या शाखा के पूर्व निदेशक प्रो. एसपी गुप्ता, प्रो. सत्यपाल तिवारी रहे।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

21 फरवरी, 2021

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ0 आशीष गौतम जी को दीक्षान्त समारोह विशेषांक (14वॉं दीक्षान्त समारोह, 29 नवम्बर, 2019) की पुस्तक भेंट करते हुए मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी तथा साथ में कुलसचिव डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता एवं विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण।

मुक्त चिंतन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

A Quarterly Bulletin of UP Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

हम पहुंचे वहां पहुंचा न कोई जहां

26 फरवरी, 2021

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चला मंथन
- शोधपत्रों का किया गया वाचन

चुनौतियों से लड़ने को बनाएं सामर्थ्यवान

राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना संस्थानाओं की वास्तविक सार्थकता – प्रो0 केएन सिंह

विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्र काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर के बीएड विभाग द्वारा आयोजित **राष्ट्रीय शिक्षा नीति मुद्दे व चुनौतियों** विषय दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का समापन दिनांक 26 फरवरी, 2021 को हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के कुलपति प्रो. कामेश्वरनाथ सिंह जी रहे। इसके पूर्व दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

बी0एच0यू0 शिक्षा संकाय के अध्यक्ष प्रो0 पी0सी0 शुक्ला ने बताया कि शिक्षा नीति में प्रमुख चुनौती चुनौती प्राथमिक स्तर से जुड़ी है। उसके निराकरण के लिए पूर्व में बनी ट्रिनिट्री व्यवस्था के अनुरूप हमें बुनियादी स्थल तक पहुंचना पडेगा। प्रयागराज से आई डॉ0 प्रियंका सिंह व वाराणसी से डॉ. जगदीश्वर सिंह ने आमंत्रित व्याख्यान दियां। प्राचार्य डॉ0 पीएन डोंगरे ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया। महाविद्यालय की ओर से इनोवेशन के क्षेत्र में किए गए कार्यो पर प्रकाश डाला। डॉ0 प्रतीक उपाध्याय सेमिनार की रूपरेखा प्रस्तुत की। अध्यक्षता वाराणसी के प्रो0 अरविन्द कुमार पांडेय ने की। डॉ0 रणजीत सिंह व शोध छात्र–छात्राओं ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इस मौके पर डॉ0 एसकेएस यादव, डॉ0 रवीन्द्र पाण्डेय, डॉ0 आरपी यादव डॉ0 कल्पना अवस्थी डॉ0 मोनिका डॉ0 जयसिह यादव, डॉ0 विष्णुकांत, डॉ0 अमित गोयल आदि थे। संचालन डॉ0 सर्वेशानन्द ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ0 लोकपति त्रिपाठी ने किया।

सेमिनार में बोलते कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह।

केएनपीजी कॉलेज में सेमिनार में उपस्थित अतिथिगण।

राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना संस्थानाओं की वास्तविक सार्थकता – प्रो0 केएन सिंह

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर में बीएड विभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति मुद्दे व चुनौतियों विषय दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के कुलपति प्रो. कामेश्वरनाथ सिंह ने कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को जीवन पर्यन्त उत्पन्न होने वाली चूनौतियों से लड़ने में सामर्थ्यवान बनाएं। नागरिकों में अच्छे व्यक्तित्व का विकास करे और उचित जीवन दृष्टि पैदा कर सके। उन्होंने कहा कि शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए जो शिक्षार्थियों में एकेडमिक, कम्युनिकेशन, प्रोफेशनल स्किल्स के साथ लाइफ स्किल्स को बढाए। कैरियर निर्माण के साथ सामाजिक सरोकार व राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना शैक्षिक संस्थानों की वास्तविक सार्थकता है। नई शिक्षा नीति इसलिए महत्वपूर्ण है कि वह इन सभी उददेश्यों की समग्रता से युक्त है।

वाराणसी, शनिवार
27 फरवरी, 2021
नगर संस्करण**
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 18

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

रेग्युलेशन और इनोवेशन के बीच संतुलन जरूरी 13

बैंकिंग सेक्टर की मजबूती के लिए सरकार प्रतिबद्ध : पीएम 13

चुनौतियों से लड़ने को बनाएं सामर्थ्यवान

राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना संस्थानों की वास्तविक सार्थकता : प्रो. केएन सिंह

जागरण संवाददाता, ज्ञानपुर (भदोही) : शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को जीवन पर्यन्त उत्पन्न होने वाली चुनौतियों से लड़ने में सामर्थ्यवान बनाएं। नागरिकों में अच्छे व्यक्तित्व का विकास करे और उचित जीवन दृष्टि पैदा कर सके। काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर में बीएड विभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति मुद्दे व चुनौतियों विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के कुलपति प्रो. कामेश्वरनाथ सिंह ने यह बातें कहीं। इसके पूर्व मां दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

उन्होंने कहा कि शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए जो शिक्षार्थियों में एकेडमिक, कम्युनिकेशन, प्रोफेशनल स्किल्स के साथ लाइफ स्किल्स को बढ़ाए। करियर निर्माण के साथ सामाजिक सरोकार व राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना शैक्षिक संस्थानों की वास्तविक सार्थकता है। नई शिक्षा नीति इसलिए महत्वपूर्ण है कि वह इन सभी उद्देश्यों की समग्रता से युक्त है। बीएचयू शिक्षा संकाय के अध्यक्ष प्रो. पीसी शुक्ला ने बताया कि शिक्षा नीति में प्रमुख चुनौती प्राथमिक स्तर से जुड़ी है।उसके निराकरण के लिए पूर्व में बनी ट्रिनिटी व्यवस्था के अनुरूप हमें बुनियादी स्थल तक पहुंचना पड़ेगा। प्रयागराज से आई डा. प्रियंका सिंह व वाराणसी से डा. जगदीश्वर सिंह ने आमंत्रित व्याख्यान दिया। प्राचार्य डा. पीएन डोंगरे ने अतिथियों का स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत किया। महाविद्यालय की ओर से इनोवेशन के क्षेत्र में किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। डा. प्रतीक उपाध्याय सेमिनार की रूपरेखा प्रस्तुत की। अध्यक्षता वाराणसी के प्रो. अरविंद कुमार पांडेय ने की। डा. रणजीत सिंह व शोध छात्र-छात्राओं ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इस मौके पर डा. एसकेएस यादव, डा. रवींद्र पांडेय, डा. आरपी यादव,डा. कल्पना अवस्थी, डा. मोनिका, डा. जयसिंह यादव, डा. विष्णुकांत, डा. अमित गोयल आदि थे। संचालन डा. सर्वेशानन्द धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डा. लोकपति त्रिपाठी ने किया।

केएनपीजी कालेज में आयोजित सेमिनार में विचार प्रस्तुत करते राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएन सिंह ● जागरण

सेमिनार

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चला मंथन शोधपत्रों का किया गया वाचन
- कानरा महाविद्यालय में आयोजित सेमिनार का समापन

वर्ष 19 | अंक 42 | पृष्ठ : 18
6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

अमर उजाला

वाराणसी
शनिवार, 27 फरवरी 2021

amarujala.com | दो-टूक | भारत ने चीन से कहा, गतिरोध वाली सभी जगहों से हटें सेनाएं...14 | उत्तर प्रदेश

'शिक्षा की सार्थकता तभी, जब व्यक्तित्व का विकास हो'

केएनपीजी कॉलेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का समापन

संवाद न्यूज एजेंसी

ज्ञानपुर। काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बीएड विभाग की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार शुक्रवार को समापन हो गया। इस दौरान समापन सत्र के मुख्य अतिथि राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि शिक्षा का सार्थकता तभी तक है जब वह नागरिकों में अच्छे व्यक्तित्व का विकास करें और शिक्षार्थियों के अंदर उचित जीवन दृष्टि के पैदा कर सकें । शिक्षा नीति ऐसी हो जो शिक्षार्थियों में एकेडमिक स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, और प्रोफेशनल स्किल्स के साथ ही लाइफ स्किल्स को बढ़ाए ।

विद्यार्थियों ने शोध पत्र का वाचन किया

मुख्य अतिथि ने कहा कि छात्रों में कैरियर निर्माण के अतिरिक्त सामाजिक सरोकारों व राष्ट्रीय दायित्वों का बोध कराना ही शैक्षणिक संस्थानों की वास्तविक सार्थकता है। विशिष्ट अतिथि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के डीन प्रो. पीसी शुक्ला ने नई शिक्षा नीति की प्रशंसा करते हुए कहा कि शिक्षा वहीं है जिसे आत्मसात किया जा सकें । शिक्षा नीति में प्रमुख चुनौती प्राथमिक स्तर से जुड़ी हुई है और उसके निराकरण के लिए पूर्व में बनाई गई ट्रिनिटी व्यवस्था के अनुरूप हमें बुनियादी स्थल तक पहुंचना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि राजनीति में शिक्षा की जरूरत है न कि शिक्षा में राजनीति की आवश्यकता है।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पीएन डोंगरे ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को बैज अलंकरण, अंगवस्त्रम व स्मृति चिह्न प्रदान करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्राचार्य डॉ. पीएन डोंगरे ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित इस महाविद्यालय ने इनोवेशन के क्षेत्र में विगत दो वर्षों में सराहनीय प्रयास किया है। इस मौके पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में हुई चर्चाओं की संक्षिप्त रिपोर्ट डॉ. प्रतीक उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। डॉ. प्रियंका सिंह व जगदीश्वर सिंह ने आमंत्रित व्याख्यान दिया । तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर अरविंद कुमार पांडेय ने की। सेमिनार में कई छात्र-छात्राओं ने शोध पत्र का वाचन भी किया। संचालन सर्वेशानंद और धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ. लोकपति त्रिपाठी ने किया । इस अवसर पर डॉ. रमेश यादव, डॉ. एसके यादव, डॉ.अरुण कुमार कुशवाहा, डॉ. रविंद्र पांडेय, डॉ.आरपी यादव,डॉ. रोशन प्रसाद, डॉ. कल्पना अवस्थी, डॉ. महेन्द्र त्रिपाठी आदि रहे।

सेमिनार में बोलते कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह।

केएनपीजी कॉलेज में सेमिनार में उपस्थित अतिथिगण।

हिमाचल में राज्यपाल के साथ हाथापाई पेज 12 | वैज्ञानिकों ने खोजा डर दूर भगाने का तरीका पेज 16

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

हाजिर हो

अभिनेता ऋतिक रोशन कंगना रनौत ई-मेल केस में शनिवार को मुंबई पुलिस के क्राइम ब्रांच के सामने अपना बयान दर्ज कराएंगे। पुलिस ने उन्हें समन भेजा है।

शनिवार, 27 फरवरी 2021, वाराणसी, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, भदोही | www.livehindustan.com | वर्ष 12, अंक 49, पेज 18, मूल्य ₹5.00, माघ शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, विक्रम सम्वत् 2077

शिक्षा से ही अच्छे व्यक्तित्व का विकास

ज्ञानपुर | **निज संवाददाता**

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बीएड विभाग में चल रहा दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार शुक्रवार को संपन्न हो गया। इसमें विद्यार्थियों को उनके दायित्व का बोध कराया गया। समापन मुख्यअतिथि रहे राजश्री टंडन विश्वविद्यालय प्रयागराज के कुलपति कामेश्वरनाथ सिंह ने किया।

इस दौरान कहा कि शिक्षा की शिक्षा की सार्थकता तभी है जब नागरिकों का अच्छा व्यक्तित्व हो जाए। विद्यार्थियों में कैरियर निर्माण के अतिरिक्त सामाजिक सरोकारों व राष्ट्रीय दायित्व का बोध कराना ही शैक्षिक संस्थानों की वास्तविक सार्थकता है। शिक्षा ऐसी हो जो नागरिकों उनके दायित्व को बोध कराए। एक शिक्षार्थी के अंदर छिपी क्षमता का विकास करने की सबसे अहम भूमिका शिक्षकों की होती है। कैंपस में कम्युनिटी में जुड़ाव होना समय की मांग है। हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी के शिक्षा संकाय के अध्यक्ष पीसी शुक्ला ने नई शिक्षा नीति की तारिफ की।

कहा कि शिक्षा वह है जिसे आत्मसात किया जा सके। शिक्षा नीति में प्रमुख चुनौती प्राथमिक स्तर से जुड़ी है और उसके निराकरण को पूर्व में बनायी गई व्यवस्था के अनुरुप हमें बुनियादी स्थल तक पहुंचाता है। कालेज के प्राचार्य डा. पीएन डोंगरे ने अतिथियों का भव्य स्वागत किया। कहा कि विद्यार्थियों का देश के प्रति क्या दायित्व है यह समझना अत्यंत जरुरी है। युवा वर्ग की सक्रियता के बिना किसी अभियान को पूरा नहीं किया जा सकता। इस मौके पर डा. प्रतीक उपाध्याय, डा. प्रियंका सिंह, डा. जगदीश्वर सिंह, प्रोफेसर अरविंद कुमार पांडेय, डा. रणजीत, डा. रमेश यादव, डा. एसके यादव, डा. अरुण कुमार, डा. रविंद्र पांडेय, डा. आरपी यादव, डा. रोशन प्रसाद, डा. कल्पना, महेंद्र त्रिपाठी आदि उपस्थित थे।

केएनपीजी में शनिवार को राष्ट्रीय सेमिनार में बोलते अतिथि। • हिन्दुस्तान

गुदा में जलन
न?
निर्मित
स®
राम
piles